साप्ताहिक भविष्य

१४ जून से २० जून १९७९ तक
पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेष : यह सप्ताह आपके लिए पर्याप्त अच्छा है, किसी विशेष कार्य के पूरे हो जाने से खुशी, परिश्रम द्वारा रुके एवं अभीष्ट कार्य भी सिद्ध किए जा सकते हैं, व्यापार में उन्नति, लाभ बढ़ेगा।

वृष : नई योजना आरम्भ करने के लिए यह सप्ताह अच्छा है, नए कामों से अच्छा लाभ हो सकता है, स्थायी कामों में भी उन्नति एवं सुधार के अवसर मिलेंगे, आयं यथार्थ, विरोधी पक्ष से बचें।

मिथुन : यह सप्ताह भी पर्याप्त अच्छा रहेगा, विगत समय में किये कामों के सुपरिणाम अब मिलने लगेंगे, जो हानियां या बाधायें पैदा हो गई अब दूर होती जायेंगी प्रयास सफल रहेंगे।

कर्क : सफलता के मार्ग में कुछ बाधाएं पैदा होंगी, फिर भी हालात पहले से ठीक चलते महसूस होंगे, स्थायी कामों में सुधार परन्तु धन लाभ कुछ देर से होगा, शत्रु एवं रोग से परेशानी।

सिंह : विगत दिनों की तुलना में यह सप्ताह अच्छा रहेगा, परन्तु ध्यान रखें कि क्रोध या जल्दबाजी में कोई भी काम न करें वर्ना हानि हो सकती है, प्रयास करने पर विशेष काम बन जायेंगे, व्यापार भी सुधरेगा।

कन्या : आर्थिक समस्या दूर होती महसूस होगी और हालात भी पहले से साजगार चलने लगेंगे, धन लाभ का नया साधन बनेगा, परिवार से सुख, रोग पर विजय, मनोरंजन पर व्यय अधिक।

तुला : यह सप्ताह संघर्षपूर्ण भी है और दिलचस्प भी, चल रहे कामों में सुधार व उन्नति तो होगी परन्तु धन प्राप्ति में कुछ बाधाएं पड़ेंगी या खर्च काफी होता रहेगा, आर्थिक स्थिति संतोषजनक रहेगी।

वृश्चिक : सप्ताह पहले से कहीं अधिक अच्छा रहेगा, अनेक समस्याओं का समाधान हो जावेगा और कुछ विशेष काम भी पूरे हो जायेंगे, लेकिन परिश्रम भी काफी करना पड़ेगा, यात्रा न करें।

धनु : सफलता प्राप्त करने के लिए कठोर परिश्रम की आवश्यकता है, मानसिक परेशानी एवं घरेलू समस्याओं में घिरे रहेंगे, जिसके कारण कारोबारी जीवन में भी परेशानी पैदा हो सकती है।

मकर : नए काम से लाभ हो सकता है, सप्ताह पहले से अच्छा है, सरकारी एवं सम्पत्ति सम्बन्धी कामों में भाग-दौड़ करने पर सफलता मिल जाएगी, स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।

कुम्भ : कुछ समस्याओं से छुटकारा मिल जावेगा, कामकाज की स्थिति में सुधार करना पड़ेगा या स्वतः ही हो जावेगा, लाभ की मात्रा भी बढ़ेगी, सेहत को सभाले रखें, महा पुरुषों की संगति से लाभ होगा।

मीन : भाग्य आपका साथ देता रहेगा और आप भारी संकट में पड़ने से बच जायेंगे कोई झूठा आरोप लगने का अन्देशा है, अन्य लोगों के सहयोग से शत्रु आपका कुछ न बिगाड़ सकेंगे, सावधानी से रहें।

मैं दीवाना का एक पुराना व नियमित पाठक हूं। दीवाना का नया अंक मिला। मुख पृष्ठ देखते ही हँसी आ गई। पिलपिल सिलबिल, मोटू, पतलू काफी मजेदार रहे। धारावाहिक उपन्यास भी अच्छा रहा। बाकी सारे फीचर थे। आशा है अगला अंक भी रोचक होगा व जल्द मिलेगा।

जुबैर अहमद—नई दिल्ली

दीवाना का अंक नं० १६ मिला। यह अंक मेरा पहला अंक था। अब दीवाना पढ़े बिना रह नहीं सकता। पढ़ कर मैं बहुत ही खुश हुआ। 'मोटू-पतलू' पढ़कर मेरे हंसते-हंसते पेट में बल पड़ गये। मुझे सबसे अधिक 'फैण्टम' अच्छा लगा। **अम्हर हुसैन—बम्बई**

दीवाना का अंक १७ प्राप्त हुआ। मुख पृष्ठ काफी रोचक व आकर्षक था। इसके सभी स्तम्भ रोचक थे। पर परोपकारी को न देखकर निराशा हुई। मोटू-पतलू और सिलबिल पिलपिल बहुत पसन्द आये। अगर आप इंसपेक्टर ईगल को शुरू कर दें तो दीवाना को आंठ चांद लग जायें। मैं दीवाना को वार्षिक प्राप्त करना चाहता हूं। इसके लिये क्या करना होगा ?

ए० सी० डेविड—मेरठ

वार्षिक ग्राहक बनने के लिये ४८ रुपये मनीआर्डर से भेज दीजिए। —सं०

मेरे दोस्त 'सत्यपाल वधावन' को दीवाना' पढ़ने की एक आदत लग गई है। मैं उसे बराबर कहता हूं कि तुम क्यों बेकार कागजों के पिछे पड़े हुए हो ? वह जवाब देता है कि 'दीवाना एक बार पढ़कर तो देखो। उससे मैंने दीवाना अंक नं० १६ लेकर पढ़ा, सचमुच 'दीवाना' मुझे बहुत ही रोचक लगा। विशेष कर इस अंक में मुझे 'दिल्ली दूर दर्शन का फैसला', 'मोटू-पतलू', 'फैण्टम' 'एक दोतीन,'दीवानी टिकटें,'कहानियां 'ठोकर', 'मारे गए गुलफाम' काफी रोचक लगीं। आपकी इस लोकप्रिय पत्रिका दीवाना' में केवल एक बात की कमी है, वह है यह कि 'दीवाना' में 'प्रतियोगितायें' आप बहुत कम देते हैं ?

असिम चक्रवर्ती—कतरासगढ़

मुझे आपकी पत्रिका का नया अंक प्राप्त हुआ। इस अंक में मोटू-पतलू ने खूब हंसाया, बस मजा आ गया। सारी कहानियां मजेदार थीं। दीवाना दिन प्रतिदिन तरक्की करे मेरी तो बस यही आशा है और काका के कारतूत बहुत मजेदार रहा और आनन्द मिला। उम्मीद है कि अगला अंक इससे भी मजेदार होगा।

ओम प्रकाश, बिक्रम जीत [illegible]—दिल्ली

दीवाना अंक १६ काफी इन्तजार के बाद मिला, इस बार मुख पृष्ठ पर चिल्ली महाराज का नया रूप देखकर हम हँसे बिना नहीं रह सके। इस अंक में यूं तो सारी सामग्री एक से बढ़ कर एक हास्य सामग्री थी फिर भी मोटू पतलू सर्वश्रेष्ठ चित्र कथा और विशेष फिचर 'एक दो तीन' बहुत ही मजेदार लगी। यदि दीवाना में पाठकों द्वारा लिखित हास्य कहानियों को आप स्थान देना शुरू करें तो यकीनन दीवाना पाठकों का और मन जीत लेगी।

एम० मंजूर हसन 'कादरी'—बीकानेर

मुख पृष्ठ पर

नेता भाषण दे रहा, बातें ऊट पटांग
कान पकड़ मेरा, मनवा लो अपनी मांग
मनवा लो अपनी मांग, वोट तुम मुझको देना
चाहे वोट के बदले, तुम नोट ले लेना।
नेता कर रहा था, एक घन्टे से टर्र टर्र
सुन कर आया ताव, मंगाया सड़ा टमाटर
पास खड़े कपिल को, दिया टमाटर थाम
ऐसो बम्पर मारो, हो जायें काम तमाम॥

अंक : २१, १४ जून से २० जून १९७९ तक
वर्ष : १५

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक: कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे छमाही : २५ रु०
वार्षिक : ४८ रु० द्विवार्षिक : ९५ रु०

किशोर कुमार अग्रवाल, मनमाड (नासिक)

प्र० : मुसीबत से पीछा छुड़ाने का उपाय बताइये ?

उ० : मुसीबत ने तुम्हारा साथ नहिं छोड़ा मुसीबत में,
तो तुम क्यूं छोड़ते बेटे, मुसीबत को मुसीबत में।

चन्द्रशेखर गोस्वामी, भीमगोड़ा-हरिद्वार

प्र० : मरने की चिन्ता किसे नहीं होती काका जी ?

उ० : आत्मा चोला बदलती, नवजीवन मिल जाय।
ज्ञानी-निष्कामी नहीं मरने से घबराय।।

तसलीम अहमद खां, बदायूंनी, मुरादाबाद

प्र० : टूटे दिल की मरम्मत कैसे होती है ?

उ० : वैल्डिंग कर वाइए दिल की बढ़े मियाद,
ऊपर से कलई करे, शहर मुरादाबाद।

लेश पंकज, धर्मतल्ला-कलकत्ता

प्र० : मुझे मेरे मित्र ठगने की कोशिश करते रहते हैं ?

उ० : आप ठगा ठाकुर बनो, ठगो न दूजा कोय,
अपन ठगाए सुख मिले, और ठगे दुख होय।

लौकी प्रकाश, काशीपुर (नैनीताल)

प्र० : मूल्य बढ़ते हैं तो सरकार बढ़ने नहीं देती, घटते हैं तो घटने नहीं देती, यह क्या तमाशा है ?

उ० : बनी रहें यह कीमतें, बनी रहे सरकार।
नीची-ऊंची नाव हो, छूट जाय पतवार।।

विनेश भदाई 'राजा', शिवाजी मार्केट—इन्दौर

प्र० : जहन्नुम में औरतें ज्यादा हैं या मर्द ?

उ० : काका ने देखा नहीं कभी जहन्नुम जश्न,
तुम जाकर के देख लो, हल हो जाए प्रश्न।

मोती मातवति, नेपालगंज (नेपाल)

प्र० : अक्ल किस जगह बिकती है, पता बता दीजिए ?

उ० : छिपी-छिपी रहती सदा, नहीं दिखाती शक्ल।
बिक्री कर की वजह से, बिके ब्लैक में अक्ल।।

राजकुमार शर्मा, नौरंगाबाद-इटावा

प्र० : लड़के ही लड़कियों को छेड़ते हैं। लड़कियां, लड़कों को क्यों नहीं छेड़तीं ?

उ० : पहिले लड़का छेड़ता-भरे इश्किया आह।
जीवन भर वह छेड़ती, जब हो जाय विवाह।।

टिंकू मोंगा, मोंगा मंडी (पंजाब)

प्र० : आप बहुत तुकें मिलाते रहते हैं, हम अपने दिल की तुक किससे मिलाएं ?

उ० : कातिल का तिल देखकर, दिल जब बिस्मिल होय,
उसका दिल हासिल करो, वरना केंसिल होय।
दिल की तुक हैं सेंकड़ों, कौन यहां लिख पाय,
कोश तुकों का हाथरस, काका से मिल जाय।

पप्पन मदनकिशोर होतवानी, रायपुर (म० प्र०)

प्र० : काका जी, दिल धड़कना कब शुरू होता है ?

उ० : 'धड़कन चालू हो गई, जिस क्षण जन्मे आप।
'बाढ़ी किसके इश्क में,' ? उसको लीजे नाप।।

मोहन प्रकाश अग्रवाल, ग्वालियर

प्र० : डियर कक्के, बचपन में कितने मारे थे छक्के ?

उ० : कक्के के छक्के जुड़े, शतक हुई तैयार।
छपकर पुस्तक रूप में, बिकें सरे बाजार।।

अजय कुमार सिंह, शिलोंग (मेघालय)

प्र० : शादी करना क्यों जरूरी है, क्या सिर्फ प्यार से काम नहीं चल सकता ?

उ० : प्यार टेम्परेरी समझ, शादी परमानैन्ट।
बिना शादी के 'बछेड़ा' बनो इण्डिपेन्डेन्ट।।

महावीर सिंह सांगा—अलवर

प्र० : काका जी, आपको कोई गर्लफ्रैन्ड है क्या ?

उ० : पूछ रहे हो प्रश्न यह, जब यौवन का 'ऐण्ड'।
गर्लफ्रैण्ड थी उन दिनों, अब है बुढ़िया फ्रैण्ड।।

मो० जहांगीर, मेन रोड, रांची

प्र० : फांसी पर लटकते समय मियां भुट्टो ने क्या सोचा होगा ?

उ० : मुक्का मैंने दिखाया, लड़ूं हजारों साल।
फिर भी भारत अंत तक, मुझ पर रहा दयाल।।

मोहन मिश्रा, देशबन्धु पाड़ा, सिलीगुड़ी

प्र० : गरीबों पर अमीरों का जुल्म हमेशा से क्यों चला आ रहा है ?

उ० : आदिकाल से नियम यह, देख रहे हम-आप।
छोटी को, मछली बड़ी, निगल जाय चुपचाप।।

श्याम माहेश्वरी अशोक, फारबिसगंज

प्र० : जवानी चढ़ने पर बदसूरत लड़की भी आकर्षक क्यों लगती है ?

उ० : यौवन में तो गधी भी, लगती परी समान।
ढली हुस्न की दुपहरी, बन गई मम्मी जान।।

जलील हवारी, गहवा, बीरगंज-नेपाल

प्र० : किसी अजनबी हसीना से अचानक मुलाकात हो जाय तो ?

उ० : बहिन-बहिन कहिए उसे, बढ़े प्यार की रेंज।
जब बन जाए प्रेमिका, रिश्ता कर लो चेंज।।

सत्यनारायण खण्डेलवाल, बाबावाड़ा-कोटा

प्र० : अगर मैं बागवां होता तो गुल-गुलशन बना देता।
कलि को खिलने से पहले, मैं सीने से लगा लेता।।

उ० : खुदा हुशियार है, मौका ये मिलने ही नहीं देता।
मसलता रहता कलियों को, तू खिलने ही नहीं देता।।

अपने प्रश्न केवल
पोस्ट कार्ड
पर ही भेजें।

काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

21-79

गर्मियां आ गई हैं। सारे हिल स्टेशन वाले टूरिस्टों को आकर्षित करने का प्रयास करते हैं। वह यदि सच्चा विज्ञापन दें तो कुछ ऐसा होगा।

इस बार टिहरी-गढ़वाल आने का प्रोग्राम बनाइये

हिल स्टेशन की सारी सुविधायें और लौटते समय मन पसन्द मंडू लेकर जाइये।
एक पंथ दो काज

धरती का स्वर्ग काश्मीर आपके लिये पलकें बिछाये बैठा है!

शेख अब्दुल्ला समर्थकों और उनके विरोधियों की आये दिन बीच सड़क पर होने वाली जूत-पैजार का आंखों देखा हाल देखने का आनन्द लूटिये।

चैल पधारें

हिमाचल स्थित चेल में विश्व का सबसे ऊंचाई पर स्थित क्रिकेट ग्राऊंड है। क्रिकेट प्रेमी यहां आयें। यहां आप शून्य पर आऊट हो भी जायें तो कोई हंसने वाला नहीं होगा। क्योंकि यहां के स्थानीय लोग क्रिकेट समझते ही नहीं।
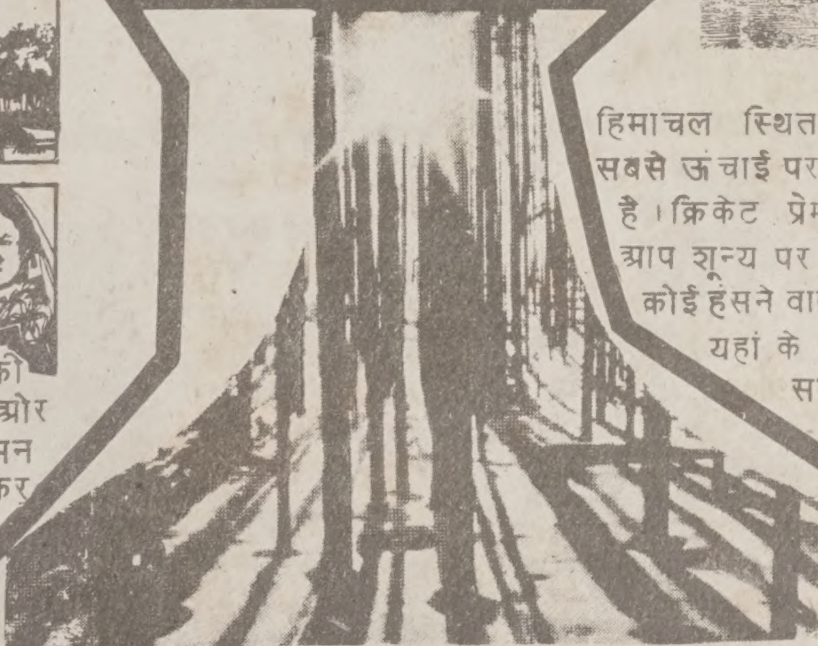
देवताओं की घाटी कुल्लु मनाली आपको बुला रही है

यहां घर की बनी लोकल शराब बहुत सस्ती मिलती है।

नैनीताल आइये यहां पूर्ण नशाबन्दी लागू है

स्मगल करके शराब लाने वालों के तमाशे देखिये। आप खुद बिस्तर बंद में बोतलें लाकर नैनीताल प्रवास का खर्चा निकाल सकते हैं।

ऊटाकमंड देखिये

गर्मियों में ठंडो का आनन्द

(यहां रेस कोर्स भी है। असल में वही आपको सबसे ज्यादा ठंडा करेगा।)

दार्जीलिंग पुकार रहा है

कलकत्ता से दार्जिलिंग को खिलौना गाड़ी जाती है। यह बहुत मंथर गति से चलती है। आप बगेर टिकट सफर कर सकते हैं। टी० टी० आये तो गाड़ी इतनी धीमी होती है कि आप सहज ही उतर सकते हैं।

नेपाल आइये

CASINO

भंग व चरस पीने की पूरी छूट है।

राजस्थान के सारे मंत्री किसी न किसी बहाने यहीं पड़े मिल जायेंगे। गोट ठीक बैठी तो ठेके, लायसेंस व परमिट से जिन्दगी सुधर जायेगी।

बद्रीनाथ व केदारनाथ
की तीर्थ यात्रा करें
यदि आप नास्तिक हैं
तो आपको और भी
मजा आयेगा। अंधविश्वासियों
की मूर्खता देखने को
मुफ्त में मिलेगी।
पहाडों की रानी
मसूरी पधारिये
हनीमून मनाने
वालों के विशेष
आकर्षण
यहां बिजली की सप्लाई प्रायः ठप्प
रहती है। अंधेरा रहता है।
शिमला आपको सदायें दे रहा है
मुख्यमंत्री शांता कुमार और उनके
विरोधियों की छीना-झपटी देखिये,हो
सकता है आप ही वह भाग्यशाली
व्यक्ति हों जिनके सामने
शांता कुमार मंत्री मंडल
का पतन हो।
चंबा मंडी का
निमन्त्रण
यहां की
स्त्रियों को
बहुत ज्यादा
आजादी परम्परा-
गत रिवाजों द्वारा
प्राप्त है।
डलहौजी
में आपका स्वागत है
यहां सब रिटायर्ड फौजी
और सिविलियन रहते हैं।
नजरें कमजोर हैं। अतः युवक-
युवतियों को काफी आजादी है।
बूढ़े तीन फीट से अधिक दूर
नहीं देख पाते।
गोआ
आपका
स्वागत
करता है
गोआ के बीचों पर आपको
हिप्पियों से चरस का सुट्टा
मुफ्त लगाने को मिलेगा।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

हरबिन्द्र सिंह—मोगा : मैं आपको अपना उपन्यास 'मजबूरी' भेजना चाहता हूं, पर इसमें मजबूरी यह है कि हर सप्ताह एक-एक किस्त ही भेज पाऊंगा, क्या आप स्वीकार करेंगे ?

उ० : हमारी भी मजबूरी यह कि पूरा उपन्यास पढ़े बिना उसके छापने या न छापने का फैसला नहीं कर सकते।

मोहसिन अली, सिद्दीकी—वाराणसी : यदि किसी प्रकार भुट्टो जीवित होकर अब आपके पास आ जाये तो आप क्या करेंगे ?

उ० : उन्हें पाकिस्तानी जनता की हालत बतायेंगे, जो आज कह रही है।

मन बहलाना आ गया, संवर गई तकदीर,
अपने अश्कों में मिले, तेरी ही तस्वीर।
दीवानी होकर कहूं, थाम ले मेरा हाथ,
मैं तेरी तस्वीर से, पहरों करती बात।
देख रही थी प्यार से, मैं तेरी तस्वीर,
बिजली कमरे में गिरी, छत का सीना चीर।

ओम प्रकाश—दिल्ली : चाचा जी, क्या बहस में पुरुष नारी से जीत सकता है ?

उ० : क्या आपको इस बात पर शक है कि हम पुरुष हैं।

शुजाउद्दीन सुल्मानी—सहारनपुर : चाचा जी, मैं आपको कहानी भेजूं तो क्या आप उसका पारिश्रमिक देंगे ?

उ० : कहानी भेजने पर पारिश्रमिक देने लगे तो हमारा दीवाला निकल जायेगा। हम उस कहानी पर पारिश्रमिक देते हैं जो प्रकाशित होती है।

केवल प्रकाश दुआ—काशीपुर : डीयर अंकल, पत्नी गुस्से में हो तो पति को क्या करना चाहिए ?

उ० : उसे यह दोहे सुनाने चाहियें।

तुम पर मैं करता रहा, एक अटल विश्वास,
रूंद रहें क्यों पैर से, मुझे समझ कर घास।
दुनिया गिरगिट की तरह, बदले रंग अनेक,
तुम भी सर को फोड़ लो, फिर भी हम हैं एक।

केवल प्रकाश दुआ—काशीपुर : चाचा जी, स्वर्गीय जुल्फिकार अली भुट्टो पर शेर सुनाइये ?

उ० : उनकी बजाय बेनजीर भुट्टो और नुसरत भुट्टो पर शेर जाहिर है :

फूल तो दो दिन बहारें जांफिजा दिखला गये,
हसरत इन गुन्चों पे है जो बिन खिले मुर्झा गये।

ओमप्रकाश शर्मा—कृपया दीवाना मंगाने का कोई सरल तरीका बताइये ?

उ० : हमें वार्षिक चन्दे के ४८ रुपये भेज दीजिये।
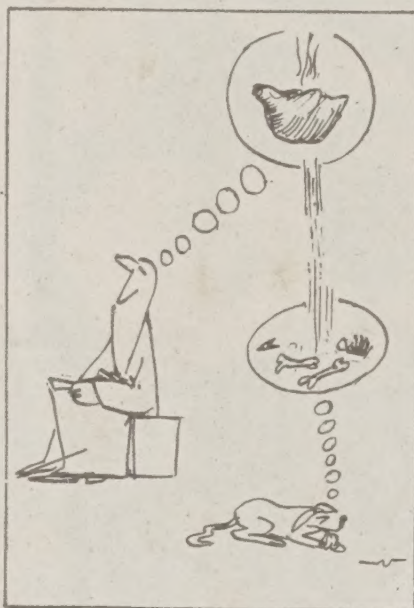
शरद जैन—दिल्ली : पहले जमाने में आदमी की पहचान चरित्र से होती थी, अब किससे होती है ?

उ० : चित्र से—यदि वह किसी मंत्री के नंगे पुत्र का हो।

चलचित्र से—जिसमें जीनत अमान हो, और कपड़े न हों।

पवित्र से—यदि वह पूरी तरह भ्रष्ट हो।

मित्र से—यदि वह पवनपुत्र मित्र चौधरी चरण सिंह का हो।

आपको राज नारायण और जयप्रकाश नारायण में से किसी एक को देना चाहूं तो आप किसे लेना पसन्द करोगे ?

उ० : राम का नाम लेना पसन्द करेंगे, राज नारायण और जयप्रकाश नारायण को आप अपने ही पास रखिये। हमें तो प्रेमा नारायण दे दीजिये।

कुलदीप श्रीवास्तव—शाहजहांपुर : चाचा जी, क्या चाची आप पर कभी मेहरबान हुई हैं ?

उ० : वह अपने ऊपर भी कभी मेहरबान हुई हैं तो बहुत खतरनाक तरीके से, जैसे एक बार दो सहेलियां एक झील के किनारे खड़ी थीं, जिसका पानी पवित्र माना जाता था। एक सहेली ने दूसरी सहेली से कहा, 'यदि तुम्हारा यह कहना सत्य है, कि इस पवित्र जल में नहाने से मेरी उम्र बीस साल की बजाये अट्ठारह साल हो जाएगी तो मैं क्या इस झील में डूब मरने को तैयार हूं, इस पर दूसरी सहेली ने पूछा, 'आखिर बीस और अट्ठारह में अन्तर ही कितना है ?' पहली ने उत्तर दिया, 'एक पति और दो बच्चों का।'

ध्रुव कुमार, रौतहट गोर—नेपाल : मुझे एक लड़की ने ठुकरा दिया है, क्या करूं ?

उ० : आप ठुकराये जाने के गम को ठोकर मारिये। और किशोर कुमार की सुरीली आवाज में गा-गा कर कहिये :

देखे हैं हमने ख्वाब कुछ ऐसे हरे-हरे,
मर कर भी होंगे बोल हमारे खरे-खरे।
जाना मेरे मजार से जाना परे-परे,
ठोकर से जाग उठते हैं आशिक मरे-मरे।

रमेश डांगा, भाडा—उज्जैन : चाचा, आज आदमी शराब पी रहा है, या शराब आदमी को पी रही है ?

उ० : हमें तो इतना पता है कि मोरार जी देसाई की पालिसी दोनों को ही 'ड्रिंक' कर रही है।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

परोपकारी
यह चटरजी बाबू को कुछ परेशानी है शायद
क्यों चटरजी बाबू क्या हाल है ?
अपना हाल तो बहुत खराब है, हमारा बौस हमको बहुत तंग करता है ।
बस इतनी सी बात ? कल से आपका बौस आपको तंग नहीं करेगा ।
मैं उससे बातकर के सब ठीक कर दूंगा. आप बिल्कुल चिंता मत कीजिए
बहुत धन्यवाद ।
चैटरजी बेचारा सीधा आदमी है उसको कोई तंग करे बड़ी बुरी बात है । मैं उसके बौस को ऐसी खरी खोटी सुनाऊंगा कि वह याद रखेगा ।
मन्जीत सिंह
दूसरे दिन
ऐ परोपकारी रे, तुमने हमारा बौस मन्जीत सिंह को क्या बोला रे, वो हम को नौकरी से निकालने की धमकी देता है ।
आपने ही तो कहा था कि बौस आप को तंग करता है इसलिए मैं उसे डांट कर आया हूं।
तुम अपना टौंग सब जगह क्यों फंसाता है । हम तो डी. टी. यू. का ५७२ न० बौस के बारे में बात किया था, तुमने हमारा ऑफिस का बौस सेभी रिलेशन खोराब कर दिया । तुम तो एकदम बौंगा है ।
बात-बे बात की
इस पानी में शार्क, मगर-मच्छ या कछुए तो नहीं हैं? क्योंकि इनसे मुझे बहुत डर लगता है!
अरे साहब, आप बेफिक्र रहिए। यहां मगरमच्छ, शार्क और कछुए कहाँ -
उन्हें तो व्हेल मछलियां और आक्टोपस ही इस समुद्र में नहीं आने देते

कविताएं
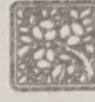
रोजगार

—हुड़दंग नगनौवी

समाचार पत्र में
छपा विज्ञापन,
अब विश्व के प्रत्येक
बेरोजगार व्यक्ति को
रोजगार प्रदान किया जाएगा,
हमारी एजेंसी से
कीजिए सम्पर्क स्थापित
कोई भी व्यक्ति बेरोजगार नहीं रह पाएगा,
कक्षा एक से एम० ए० और समकक्ष
अनुत्तीर्ण सभी विद्यार्थियों को
धंधे से लगा देंगे !
किंतु शर्त यह है,
कि आमदनी का आधा भाग
बतौर कमीशन हम लेंगे ?
एक अत्यन्त गरीब, बेरोजगार युवक
जीवन से था परेशान
दिखता था निरा रोगी,
ने आवेदन पत्र भर कर ज्ञात करना चाहा
कि करना क्या होगा ?
उत्तर आया
भिक्षा मांगने के आधुनिक तरीके सिखाये
जाएंगे,
जितनी भिक्षा मांग कर लाएं
आधी स्वयं रख लें,
आधी एजेंसी में जमा करनी होगी ।

काम

—राजेन्द्र चंचल धामपुरी

अनपढ़ जनता को
भाषण पिला रहा था,
उसकी खुशियों को
रस्मी तौर पर
उनसे मिला रहा था।
पीछे से कोई बोला
हमारा दिमाग खा रहे हो ?
क्यों उल्लू
बना रहे हो ?
वह कहने लगा
ऐसी बात नहीं है,
मेरा काम यही है ।

दुमदार दोहे

—जयप्रकाश दुबे 'राज'

घोट गटागट पी गये, सिद्धान्तों की भंग,
नेताजी पे चढ़ गया, जब कुर्सी का रंग,
हर दिन होली सा लगता ।
छोटे बड़े सब गा रहे, हैं एकता का राग,
एकसूत्री कार्यक्रम, लगा रहे सब आग,
एकता का यही तकाजा ।
पब्लिक की पंचायत ने, कर दिया है न्याय,
मानुष तो भूखे मरें, गधे पंजीरी खायें,
जनतंत्र की यही परिभाषा।
जनता के चूल्हे चढ़ी, पंचमेल तरकारी,
रसोईये ही खा रहे, हैं सारी की सारी,
राम राज है आया भैया ।
नारायण ने ठान लिया, मोरारी से बैर,
अपनों ने धोखा दिया, क्या करते फिर गैर,
सड़क पर आ गये राजा ।

कवि और हेलमेट

—महेश चन्द्र 'स्वदेशी'

कवि 'गोल-गप्पा'
मंच पर आ रहे हैं
हैलमेट भी साथ ला रहे हैं
कविता-पाठ करने से पहले
हैलमेट लगायेंगे
निर्भीक होकर
कविताएँ सुनायेंगे ।

नशाबंदी

बी० एन० 'राकेश मिश्रा'

महानगर की
अजगर-सी
लंबी स[illegible] पर
तीन दिन का भूखा
बेचारा बेरोजगार
लड़खड़ाते कदमों से
जा रहा था,
दरोगा ने
गिरफ्तार कर लिखा-
गहरा नशा पिए
सत्ता को चुनौती दिए
कुख्यात
मरेआम जा रहा था ।

पुरस्कार ५० रु०

हम इस प्रतियोगिता में हर सप्ताह एक नेता को लेंगे । आपको उस नेता के नाम के अक्षरों से क्रमवार एक व्यंग्य कविता लिखनी होगी जो उसके कारनामों पर फिट बैठे । उदाहरण के तौर पर हमने राजनारायन जी पर कविता लिखी है । उसी प्रकार आप चौधरी चरनसिंह पर कविता लिख भेजिए । नाम के सारे अक्षरों से क्रमवार कविता की लाइनें बनानी चाहिये ।

सर्वश्रेष्ठ कविता को पुरस्कार

रायबरेली के बैसाखी नंद हैं ये,
जनता पार्टी की दाल भात में मूसरचंद हैं ये ।
नाना बयान रोज अखबारों को देते हैं,
राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की खबर लेते हैं ।
यह साहब जिसके पक्ष में खड़े होते हैं,
नादानी से उसी की लुटिया डुबोते हैं ।

चौ ध री च र न सिं ह

दीवाना के कार्यालय में हल पहुंचने की अन्तिम तिथि २३ जून ७९

उत्तर केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।

तुक्कम तुक्का
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग.
नई दिल्ली-११०००२

● एक आदमी दूसरे से—'तुम्हारा लड़का कॉलिज में कैसे चल रहा है ?'

दूसरा—'बहुत अच्छा ! कालेज फुटबाल टीम में फारवर्ड की जगह खेलता है । उसके पास बाल आया तो समझ लो गोल है ।'

पहला—नहीं नहीं मेरा मतलब पढ़ाई से था ।'

दूसरा— वहाँ भी समझ लो गोल है ।'

आप भी कलाकार हैं

नीचे दिए गए चार चित्र देखने में तो मामूली टाइल्स लगते हैं। पर हर एक चित्र में एक एक फ़िल्म स्टार की तस्वीर छिपी हुई है जिसे उभारना आप ही के हाथ में है। आपको सिर्फ़ यह करना है कि जिन टाईलों में बिन्दू नज़र आए उन्हें पेन्सिल या काली स्याही से काला करदें। देखते ही देखते फ़िल्म स्टार की तस्वीर उभर आएगी।
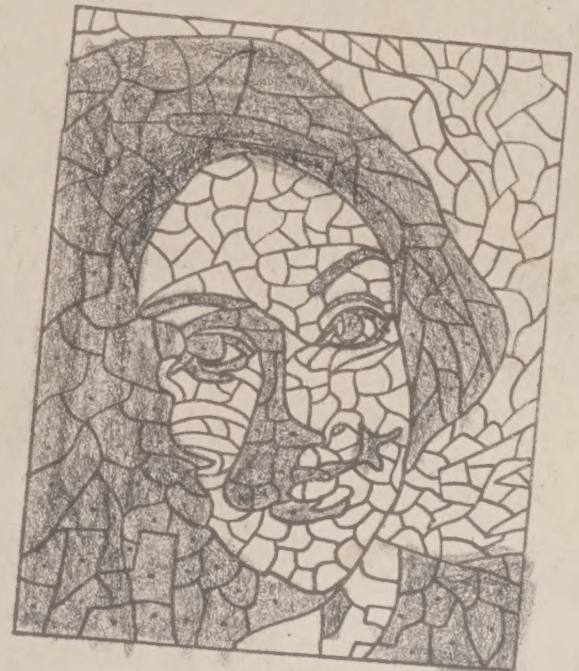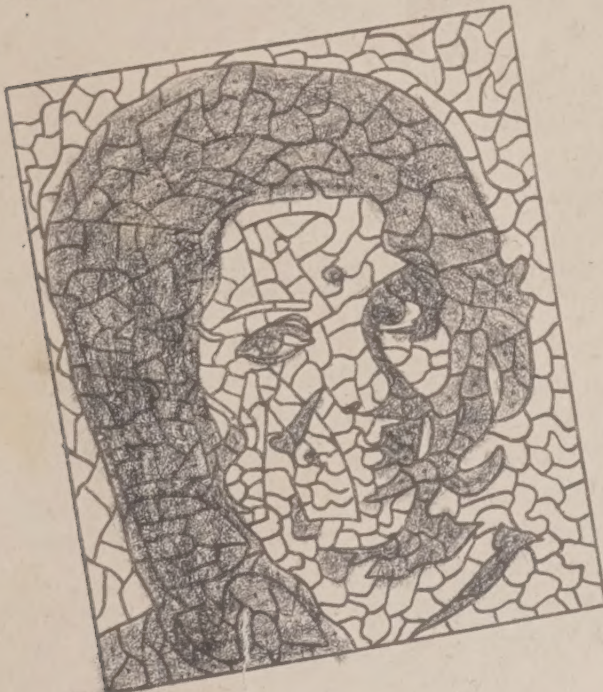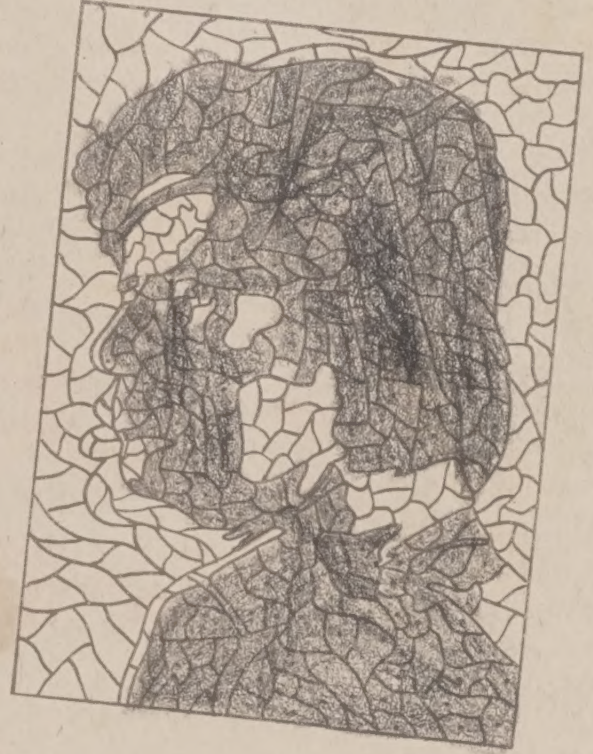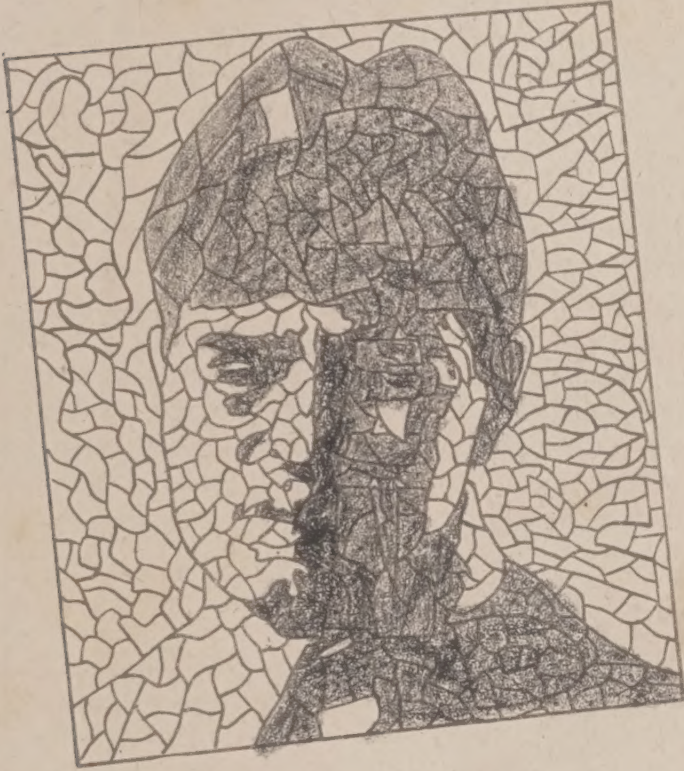
'हम गरीब आदमी हैं बेटा···किसी को क्या खिला सकेंगे···मां ठंडी सांस लेकर बोलीं, मुझे तो यह आशा नहीं थी कि तुम झोंपड़े में आना भी पसन्द करोगे।

'मां जी···आदमी गरीब और अमीर दिल से होता है···' विनोद ने गम्भीरता से कहा. 'रही मेरे आने की बात···तो हम कहां के राजा हैं···और अगर होते भी तो आपके इस स्नेह को क्या ठुकराया जा सकता है ?'

'बिल्कुल वैसे ही जैसे मैंने सोचा था।'

'क्या सोचा था आपने ?' विनोद मुस्कराया।

'जो कुछ सोचा था ठीक ही सोचा था ···और विश्वास भी था कि तुम ऐसे ही निकलोगे—सरिता तुमसे पढ़ने जाती थी सरिता की जबान से जिस लड़के की अच्छाई सुन लूं मुझे विश्वास हो जाता है कि वह अवश्य देवता स्वरूप ही होगा।'

यह बात सरिता की मां ने विनोद की प्रशंसा में कही थी और इसमें भी महानता सरिता ही की झलक रही थी—विनोद खाता रहा और सरिता के बारे में सोचता रहा—खाने के बाद कुछ देर और बैठा—जब वहां से निकला तो फिल्म का समय बीत चुका था —खम्भे के पास से गुजारा तो राजेश, सुरेन्द्र और मोहन वहां खड़े मिल गए—शायद उसी की प्रतीक्षा कर रहे थे—।

'भगवान का शुक्र है—सूरत तो नजर आई।' राजेश ने विनोद से लिपटते हुए कहा।

क्या करूं यार—परीक्षा सिर पर सवार थी।' विनोद ने हंस कर उत्तर दिया।

'इधर कहां गये थे ? मोहन ने पूछा।

'ससुराल में दावत खाने गया था।' सुरेन्द्र बोल पड़ा, मैंने स्वयं देखा था—घर में घुसते हुए।'

'सुरेन्द्र—!' विनोद गम्भीरता से बोला 'बुरी बात है—किसी कुंवारी लड़की पर इस प्रकार कीचड़ उछालना।'

'अबे जा···!' मोहन ने बुरा-सा मुंह बनाया, 'अब तक कुंवारी ही धरी होगी वह ···रात को एक बजे तक तो अकेली पढ़ती रहती है···तेरे साथ।'

'मोहन···तुम्हें याद होगा···इसी प्रकार की तुम्हारी बातों पर पहले भी हमारे सम्बंध एक बार बिगड़ चुके हैं···फिर तुमने कामिनी की शादी पर पत्र लिखकर क्षमा मांग ली थी।'

'बस' मजाक किया और झट 'आऊट' हो जाता है।' मोहन ने हँस कर कहा और विनोद के गले से लिपट गया।

'मजाक की बातों में हंसते रहते हैं···' सुरेन्द्र बोला, 'सच्ची बातों पर गम्भीर हो जाते हैं।'

'खैर···तुम लोगों के कहने से मुझपर या सरिता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता, विनोद ने हंसकर कहा, 'हां' तुम्हारे स्तर के लोगों को यह शोभा नहीं देता।'

'हम तो निम्न स्तर के लोग हैं···छोटे ···घटिया···तुम्हें अपने स्तर का ध्यान है तो अपने-आपको 'आरक्षित' रखो···।'

'देखो···अब तुम्हारा मूड फिर लड़ाई की ओर आ रहा है।' विनोद हँसकर बोला, 'चलो···तुम्हें चाय पिला लाऊं।

सुरेन्द्र इंकार ही करता रह गया लेकिन विनोद और मोहन उसे घसीटकर बलपूर्वक होटल में ले ही गए।

धीरे-धीरे छुट्टियां गुजरने लगीं और विनोद को इस बात की चिंता सताने लगी कि न जाने पिताजी ने दाखिले की फीस का प्रबन्ध किया या नहीं—उसने बीच में दो-एक बार मां से भी पूछा था किन्तु मां ने कोई स्पष्ट उत्तर नहीं दिया था—तब विनोद को अपनी पोजीशन का तीव्र अनुभव हुआ था··· उसने सोचा कि यह लोग स्वार्थी रिश्तेदारों में अपनी झूठी नाक ऊंची रखने के लिए हजारों रुपये फूंक सकते हैं लेकिन मेरी फीस के लिए दो सौ रुपये का प्रबंध नहीं कर सकते—वैसे वह पिताजी की मजबूरी भी समझता था···उनके पास घर में तो एक पैसा तक जमा किया हुआ नहीं था।

उसे दुःख इस बात का था कि जो पिताजी खाली हाथ होते हुए मां की हट पर मामा की शादी के लिए डेढ़ हजार रुपये का प्रबन्ध कर सकते हैं, प्रदर्शनी की फिजूल-खर्चियों के लिए साढ़े तीन सौ रुपये ले सकते हैं···कामिनी की शादी पर अपनी अमीरी की शान दिखाने के लिए दो हजार रुपये का प्रबन्ध कर सकते हैं···क्या मेरी फीस के लिए उन्हें दो सौ रुपये कहीं से लेते हुए अखरते हैं ? इतनी थोड़ी-सी रकम का अभी तक प्रबन्ध क्यों नहीं हो पाया ?···इससे विनोद के दिल को भारी धक्का लगा।

लेकिन इस समय विनोद की विचार-धारा कुछ उल्टी थी···उसके पिताजी वास्तव में उसके लिए रुपये जुटाने के लिए बड़े चिंतित थे और भरसक दौड़धूप कर रहे थे ···उन्होंने लाला दीनानाथ से प्रार्थना की थी लेकिन लाला ने यह कहकर साफ इन्कार कर दिया था कि पहले ही ब्याज इत्यादि मिलाकर उन पर सात हजार से ऊपर चढ़ चुके हैं···पहले उसका भुगतान करें···फिर और माँगने आयें···अब पिताजी को अपनी मूर्खता का भान हुआ था···उन्हें खेद हो रहा था कि हजारों रुपया रिश्तेदारों पर

बहा दिया और अपने बेटे के भविष्य के लिए जगह-जगह हाथ फैला रहे हैं···उस दिन वह बहुत रोए···लेकिन अब रोने से क्या लाभ था···बीता समय तो हाथ आने से रहा।

वह थके हुए चिंता में डूबे घर पहुंचे तो मां ने कहा—

'कुछ प्रबन्ध हुआ ?

'कुछ भी नहीं हुआ अभी तो।' पिताजी ने बुझे स्वर में कहा।

'विनोद आज भी पूछ रहा था···दाखिला शुरू होने में एक सप्ताह रह गया है।'

'क्या करूं ऊषा···? यह सब हमारी फिजूलखर्चियों का परिणाम है···खूब मौज उड़ा लीं···किस पर खर्च नहीं किया···और अब अपने ही बेटे के लिए केवल दो सौ रुपये का प्रबन्ध नहीं हो पा रहा।'

मां चुप होकर किसी सोच में डूब गई।

'यही समय परख का है···सबके लिए इतना कुछ किया···अब हम अनुमान लगा सकते हैं कि हमसे किसको और कितनी सहानुभूति है।'

मां ठण्डी सांस लेकर रह गयी।

दूसरे दिन पिताजी ने विनोद के फूफा से जिक्र किया। फूफा ने पूरी सहानुभूति प्रकट करते हुए अपनी विवशता जता दी साथ ही अपने दुःखों का रोना रोने लगे···कि काम में हानि ही हानि है···रोटी चलना कठिन हो रहा है—उन्होंने वीरेन्द्र को भी टटोला···लेकिन वीरेन्द्र ने जेबें झाड़कर दिखा दीं।

सब ओर से निराश होकर, माँ के कहने पर पिताजी ने अपनी साली को पत्र लिखा—विनोद आशा-भरी दृष्टि से पिताजी की ओर देखता और उनकी आँखों में झलकती चिंता देखकर निराश हो जाता उसने सब फार्म इत्यादि भर लिये थे···बस, फीस जमा करने की कसर रह गयी थी···ज्यों-ज्यों दिन गुजरते जाते उसकी निराशा बढ़ती जाती थी—एक दिन कालेज से थका हुआ वापस आया तो उसने वीरेन्द्र मामा को पिताजी और माँ के पास बैठे देखा···वह पिताजी से कह रहा था—

'मुझे आपकी चिंताओं का पूर्ण रूप से ज्ञान है जीजाजी···और स्वयं अपने आपको धिक्कारणीय समझता हूं कि आवश्यकता पड़ने पर भी आपके काम नहीं आ सकता।'

'नहीं···नहीं हमें तुमसे कोई शिकायत नहीं है···' पिताजी ने ठंडी सांस लेकर कहा, 'जो भाग्य में होना है जरूर होगा।'

'फिर भी मैं चाहता हूं अपनी ओर से आपका बोझ हल्का कर दूं,' कुछ क्षण बाद बोले, 'मेरे रहने से आपको कष्ट होता है···बोझ बने हुए हैं हम लोग···इसलिये आपका बोझ हल्का करने के लिए मैंने मकान किराए पर ले लिया है—मैं शाम को चला जाऊंगा।'

फिर वह उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना वहाँ से उठ गया···विनोद के होंठों पर कटु-सी मुस्कराहट आ गई। माँ और पिताजी आश्चर्य से रह गए···थोड़ी देर बाद पिताजी ने ठंडी साँस लेकर कहा—

'निःसन्देह···अब यह बोझ तो हल्का ही होना चाहिए।'—फिर उन्होंने विनोद की ओर देखा।

'पिताजी···' विनोद ने नजरें झुकाकर कहा, 'आप मेरे दाखिले के बारे में चिंतित न हों···मैं तो फिर भी पढ़ लूंगा···आप मुझे वही नौकरी दिलवा दीजिए।'

'तुम भी ताने दे लो बेटा···' पिताजी रो पड़े, आज तुम्हारा पिता मजबूर है तो जमाना बदला जा रहा है···।

'पिताजी—!' विनोद की आवाज भर्रा गई।

इससे आगे वह कुछ नहीं कह सका और चुपचाप अपने कमरे में चला आया···वहां वह बड़ी देर तक सिसक-सिसकर रोता रहा।

दाखिले होते रहे···समय गुजरता गया···दाखिले समाप्त होने की तारीख निकट आ गई···पिताजी की बेचैनी बढ़ती रही···हां, विनोद एकदम शांत था जैसे कुछ बात ही न हो—वास्तव में वह पिताजी की विवशता को अनुभव कर रहा था और अपनी बेचैनी प्रदर्शित करके वह उन्हें और अधिक परेशान नहीं करना चाहता था।

दाखिले की तारीख निकल गई···आखिरी दिन विनोद कालेज से लौटा तो बिलकुल गुमसुम और मौन था···लेकिन माँ और पिताजी खुश-खुश दिखाई दे रहे थे···उन्होंने विनोद को देखते ही खुश होकर कहा—

'लो बेटे···भगवान् की कृपा से तुम्हारा काम बन गया। यह कहते हुए उन्होंने दस-दस रुपये के बीस नोट विनोद के हाथ में रख दिए।

विनोद ने ध्यान से उन नोटों को देखा जैसे वह नोट न हों कुछ और हों।

'आज तुम्हारी मासी का मनीआर्डर आया है—दो सौ रुपये का।' पिताजी बोले।

'मैं न कहती थी कि मेरी बहन को हम लोगों से सच्ची सहानुभूति है।' मां बोली, 'वह भला कैसे भूल सकती है कि मैंने कभी उसे मां का अभाव अनुभव नहीं होने दिया···सभी बेटी के समान व्यवहार करती हूं—मैंने ही उसकी शादी की है।'

शेष पृष्ठ ३८ पर

पिछले सप्ताह सिलबिल-पिलपिल अमरीका की सदभाव यात्रा पर गये। जैसे कि हर हिन्दुस्तानी का फर्ज है कि वह विदेश जाये तो वहीं बसने की कोशिश करे, इन दोनों ने भी अपना राष्ट्रीय फर्ज पूरी जिम्मेदारी के साथ अदा किया अर्थात वहाँ बसने के लिए कई कॉमिक कथाओं में घुसपैंठ करने की कोशिश की। चमचागीरी की दादागीरी की। हम इस अंक में उन्होंने पीनट कॉमिक कथा के कलाकारों के साथ जो कारनामे किये उसे यहाँ पेश कर रहे हैं। कई तरह के धंधो में उन्होंने अपने को एक्सपर्ट बताया और कई पापड़ बेले। इस बार वही पापड़ आप खाइये। अगले सप्ताह से वे अपने पहले वाले ही कारनामे करेंगे क्योंकि अमरीका में कहीं उनकी दाल नहीं गली। और लौट के बुद्धू घर को आए।

सिलबिल-पिलपिल डाक्टर बने

तुम चिन्ता न करो सब ठीक हो जायेगा ? मैंने एम बी. बी. एस. पास कर रखा है। आपरेशन कर दूंगा उसका।

सो तो ठीक है डाक्टर लेकिन तुम्हारे चेहरे से लगता है तुमने डाक्टरी की बजाय झल्ली ढोने का कोर्स कर रखा है।

नए डाक्टर सिलबिल कृपया आपरेशन रूम में आयें।

ऊँह। मैं कर पाऊंगा आपरेशन?

क्या बात है तुम डर क्यों रहे हो?

मुझे खून देख कर गश आ जाता है।
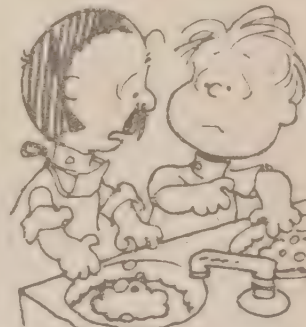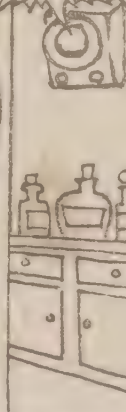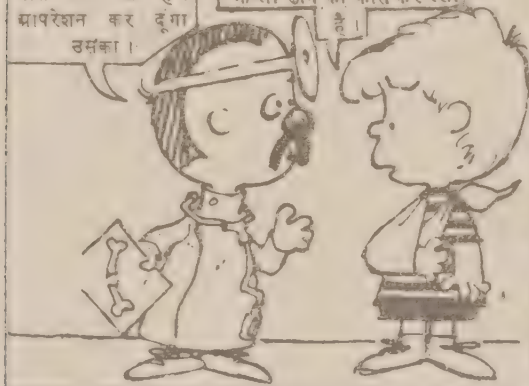
अब क्या होगा ? अब तो डाक्टर पिलपिल को बुलाओ।

कैसे-कैसे डाक्टर चले आते हैं ...स्तान से ?

हैलो ! कृपया डाक्टर सिलबिल आपरेशन थियेटर में आयें।

कृपया डाक्टर पिलपिल आपरेशन थियेटर में आयें।

सिलबिल का बच्चा कन्नी काट गया और मुझे फँसा गया। खैर मैं चला दूंगा उल्टा सीधा चाकू।

मुझे नही करवाना आपरेशन। बच्चों की कामिक कथा में गंजे का क्या काम है ?

सिलबिल पेइंग गेस्ट बना

मैं हिन्दुस्तान से आया हूं अभी मेरे पास फ्लैट कहाँ है! बस यहीं रेलवे स्टेशन पर रात गुजारनी पड़ेगी।

जब काम पक्का हो जायेगा तो फ्लैट ले लूंगा। दूसरी समस्या यह है कि यहाँ आसानी से काले आदमी को फ्लैट भी तो नहीं मिलता।

PEANUTS PLACE

चलो जब तक तुम्हें फ्लैट नहा मिलता तुम मेरे घर रहना।

ठीक है। मैं समझ लूंगा कि अपनी बहन के घर रह रहा हूं। सुबह शाम तुम्हारे घर पोचा मारूंगा और सफाई करूंगा! अगर खाना साथ मिला तो भांडे भी साफ करूंगा।

सिलबिल बचाव पक्ष का वकील बना

केस बहुत पेचीदा है लीनसचन्द पता नहीं क्या होगा ?

यार वकील तू वैसे ही घबराता है।

जिन्दगी मौत का फैसला मेरा होने जा रहा है—हवाइया तुम्हारे उड़ रही हैं।

वो तो ठीक है। बिल्ला-रंगा केस की बहस भी सुनी है मैंने।

मेम्बराने जूरी•••मेरा मुवक्किल क्या कहते हैं उसे ? क्या कहते है उसे•••?

निर्दोष है। निर्दोष है ।। निर्दोष बोल।

JURY

मेम्बराने जूरी, आप किसी फैसले पर पहुंचे।

जी हां मी लार्ड। अभि-युक्त निर्दोष हैं।

जीत गया मैं केस।

मै अब अमरीका में वकालत जमा लूंगा।

वकालत जमाओगे खाक।

JURY

जानते हो हमने इसे बरी क्यों किया ?

हमने सोचा कि जो शख्स ऐसे घटिया वकील को कर सकता है वह बैंक पर डाके जैसी चतुर योजना नही बना सकता।

JURY

यहाँ मेरे लिए कोई काम नहीं है। अब मुझे वापस जाना पड़ेगा। खेतों में गोबर ढोना पड़ेगा।

या फिर ए-वन जासूस कम्पनी में जासूसी। ठीक है। मेरा जो हाल है यहाँ वह सबके सामने है।

सामने कुत्ता आ गया। हाँ यहाँ मेरी हालत कुत्ते जैसी है।

पिलपिल-सिलबिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये।

कुदरत के मजाक
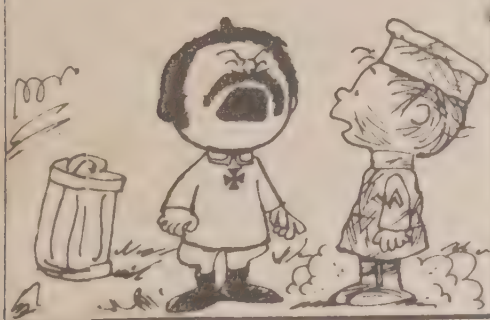
युद्ध में पराजित राजा बायाजिद को विजयी तैमूरलंग के सामने लाया गया। तैमूरलंग के एक ही टांग थी।

जैसे ही तैमूर ने बायाजिद को देखा तो पाया कि बायाजिद काना है। यह देखते ही तैमूर ने जोर का कहकहा लगाया।

बायाजिद तैमूर से बोला, 'तुम मेरी पराजय पर हंस रहे हो, लेकिन यह मत भूलो दुनिया में जो कुछ होता है ईश्वर की इच्छा के अनुसार होता है। हमारी हार जीत उसी की इच्छा का एक रूप है! मनुष्य को उस परमेश्वर की इच्छाओं के परिणाम पर नहीं हंसना चाहिये।'

तैमूर की हंसी रुकी तो उसने कहा, 'इसी बात को सोचकर तो मुझे हंसी आई! उसकी इच्छाएं कैसी विचित्र हैं। उसने एक काने का राज्य उठाकर लंगड़े को दे दिया।'

सारांश———

अन्तिम तिथि— २३ जून १९७९

पता: दीवाना साप्ताहिक ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२
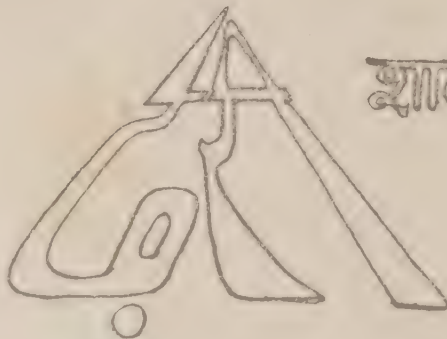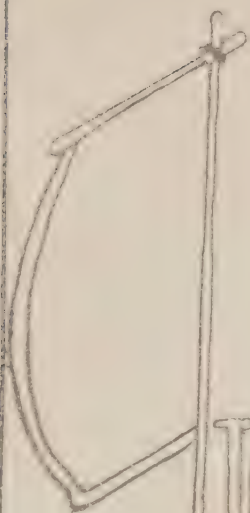
मकान मालिक और किरायेदार

सुधीन सक्सेना

मध्य रात्रि के समय किरायेदार ने,
मकान मालिक का दरवाजा खटखटाया,
उसे गहरी नींद से जगाया,
और आने का कारण बताया—
शर्मा जी, मेरी आपसे एक फरियाद है!
शर्मा जी ने आंखें मिचमिचाते हुए कहा—
कहो मिस्टर क्या मुसीबत आई है?
किरायेदार बोला—जी, ऐसा है,
मैं इस माह किराया नहीं दे पाऊंगा,
बस मेरे पर ये ही मुसीबत आई है,
क्षमा कीजिए, इससे आपकी निद्रा में,
बाधा आई है।
शर्मा जी थोड़े झल्लाये और बोले—
क्या इतनी सी बात आप सवेरे नहीं
कह सकते थे?
किरायेदार ने उत्तर दिया—
अजी सवेरे किसने देखी है?
हाथों-हाथ जो बात हो जाय,
वह अच्छी है!
जब हम सुख-दुःख के साथी हैं,
तो मैं ही क्यों इस चिन्ता में अकेला जागूं?
थोड़ा आप भी तो त्याग कीजिए,
इस माह किराया न मिलने की चिंता में,
मेरे साथ-साथ आप भी तो जागिए।

विकल्प

—आजाद रामपुरी

ये,
अपहरण, डाकू-जनी,
हत्या-हिंसा तथा बलात्कार,
या मार-धाड़, अनाचार,
जिस गति से फिल्मों में बढ़ रहे हैं,
उसे हम सहन नहीं करेंगे।
हमारी बदनामी न हो,
इसलिए इन्हें कम करने में,
बिल्कुल नहीं डरेंगे!
मंच से कहा उन्होंने,
तो हमने पूछा—'वह कैसे?'
वह पुनः बोले—ऐसे,
ये सब काम,
हम अपने अनुयाइयों को सिखायेंगे।
फिल्मों से अधिक,
राजनीति में कर दिखायेंगे॥

मोटू-पतलू की रंगीन कहानी

फाईल न० ५५५

कागज पर बनी रंगीन फिल्म अब तक जितनी बनाकर आपको दिखाई जा चुकी है, उसकी कास्ट इस प्रकार है।

डाक्टर झटका, उनकी सैक्रेट्री शोभा और शोभा के अंकल मिस्टर गुप्ता। कुछ दिन पहले शोभा की बहन सीमा का विवाह कैप्टन अशोक से हुआ और वे दोनों हनीमून के लिये कश्मीर गये मगर प्राग्राम के अनुसार लौट कर न आये।

कश्मीर के पहाड़ों पर एक अंधेरी गुफा के अन्दर डाकू भीम सिंह का गिरोह। इस गिरोह के लोग पाकिस्तानी जासूस के ऐजेन्ट भी हैं। पुलिस से हुई मुठभेड़ में इनके दोसाथी मारे गये। एक घायल हुआ। घायल का इलाज करवाने के लिये डाक्टर की जरूरत पड़ी। लोकल डाक्टर इन्हें पहचान लेगा यह खतरा था। इसलिये दिल्ली से किसी डाक्टर का अपहरण करने के लिए अपने दिल्ली के ठिकाने पर फोन किया गया।
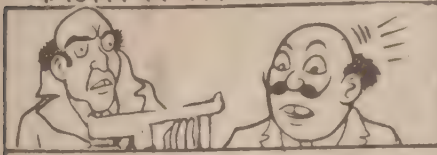
अपहरण करता डाक्टर झटका के क्लीनिक पर पहुंचे उस समय डाक्टर झटका अपनी सैक्रेट्री शोभा के साथ अन्दर के कमरे में थे। मोटू डाक्टर झटका की कुर्सी पर बैठा था। गलती से मोटू को डाक्टर समझ लिया गया और उसका अपहरण हो गया।

प्राईवेट डिटेक्टिव विक्रम, चेलाराम, और शोभा इस केस की छानबीन में लग गये।
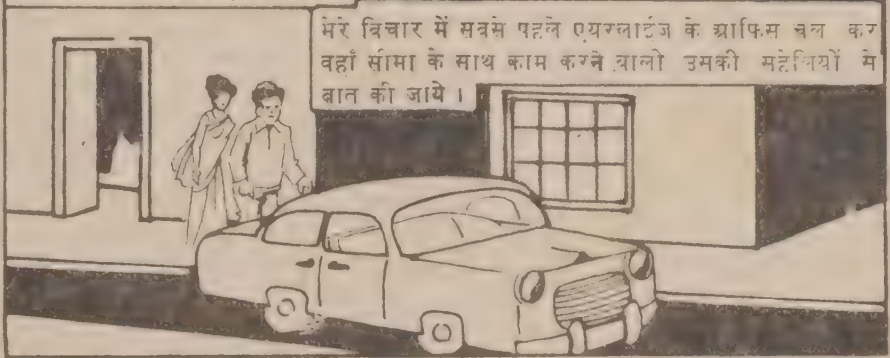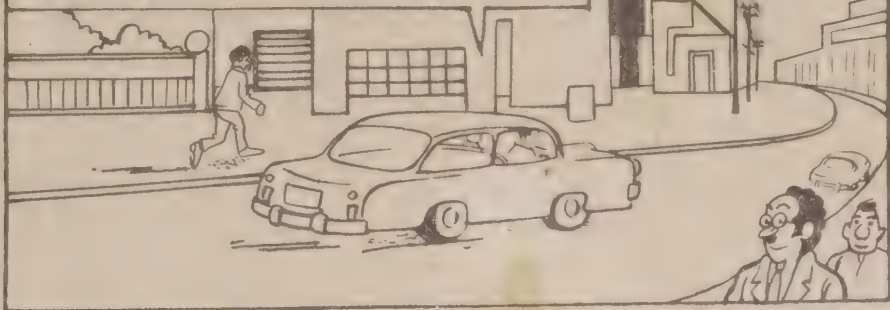
सीमा और मैं स्कूल से लेकर कालेज तक साथ पढ़े हैं। आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ कि हम दोनों कभी एक दूसरे के बर्थ डे पर साथ न रहे हों। पर कल मेरा बर्थ डे था - जो मैंने सीमा के बगैर मनाया। उसने कसम खाकर कहा था कि मैं तुम्हारे बर्थ डे से तीन दिन पहले लौट आऊंगी।

आश्चर्य की बात तो यह है कि एयर लाईन्ज के सलेक्शन बोर्ड की मीटिंग है। जिसमें हायर पोस्ट के लिए सीमा का इन्टरव्यू होना है। इस इन्टरव्यू में सलेक्ट होने पर उसे ५००० रुपया मासिक पे मिलेगी, कोठी, गाड़ी, और दूसरी सुविधायें अलग। मैं नहीं सोच सकती इतने गोल्डन चांस को सीमा किसी भी कारण से दाव पर लगा सकती है।
सीमा स्टेज आर्टिस्ट भी है। वह रंगमंच कलाकेन्द्र के एक ड्रामे में भाग लेने वाली थी। हो सकता है ड्रामे के दूसरे आर्टिस्ट कोई खास जानकारी दे सकें।
ठीक कह रही हो। चलो विक्रम वहीं चलें
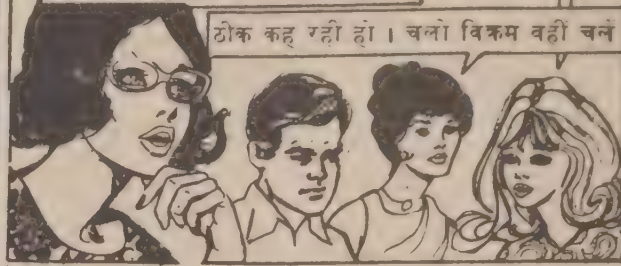
विक्रम और शोभा अब रंगमंच कलाकेन्द्र की ओर चल दिये।

आज शाम को हम अपना नाटक प्रस्तुत कर रहे हैं, धरती माँ के आंसू। सीमा इस नाटक की हीरोईन है। और इसमें उसी की मुख्य और महत्वपूर्ण भूमिका है। सूचना और प्रसारण मंत्री इसका उद्घाटन कर रहे हैं। बड़े-बड़े नेता शिक्षा आचार्य और कला के पारखों और पत्रकारों को निमंत्रण दिये जा चुके हैं। शो की टिकटों की बिक्री पूरी हो चुकी है।
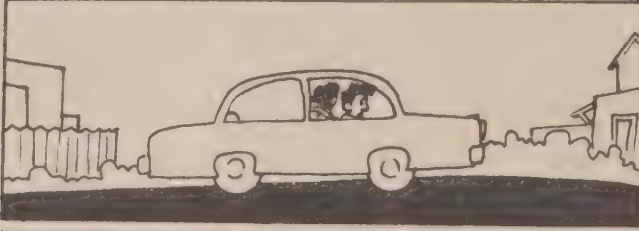
वहां पहुंच कर उनकी भेंट रंगमंच कलाकेन्द्र के निर्देशक से हुई।
हम खुद चक्कर में है

हमें समझ में नहीं आता कि सीमा के बिना अब इस नाटक का क्या बनेगा? हीरोईन के इतने महत्वपूर्ण रोल के लिए इतने कम समय में किसी और लड़की को तैयार भी तो नहीं किया जा सकता।
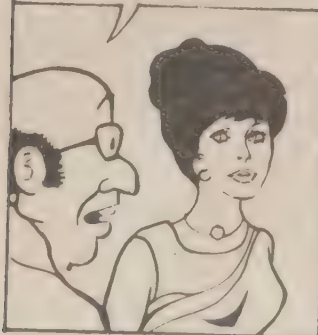
शोभा और विक्रम के पास इस समस्या का कोई हल नहीं था। रंगमंच कलाकेन्द्र से बाहर आकर अब वे कैप्टन अशोक के आफिस की ओर चल दिये।

मिलिटरी हैडक्वाटर पहुंच कर उनकी भेंट कैप्टन अशोक के चीफ आफ स्टाफ मेजर कुलकरनी से हुई।
आइए पधारिये साहब।

बहुत गंभीर मामला है । कैप्टन अशोक के बगैर कई जरूरी मीटिंग रुकी पड़ी हैं । उसके पास एक सीक्रेट फाईल है न० ५५५ । फाईल में बहुत से महत्वपूर्ण फौजी राज हैं

आफिस लाकर मे वह फाईल गायब है । हम इस मामले को अधिक देर नही दबा सकते
तभी विक्रम की नजर मेजर कुलकरनी की मेज पर पड़े समाचार-पत्र पर पड़ी और वह चौंक गया ।
कैप्टन अशोक लापता । सीक्रेट फाईल न० ५५५ गायब । कई फौजी अफसर शिकंजे में ।
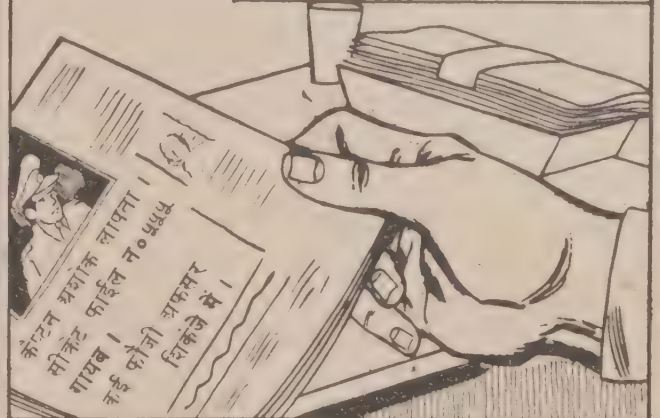
शोभा और विक्रम वहां से वापस लौटे तो अब दोनों के दिमाग में एक ही बात थी ।
श्रीनगर चलो ।
यही मैं कहने वाली थी ।
तुम्हें पता है, उन्होंने श्रीनगर में कहां ठहरने को कहा था ?
श्रीनगर से गुलमार्ग जाते समय प्रिन्स गैस्ट हाउस है । उसका नाम लिया था ।
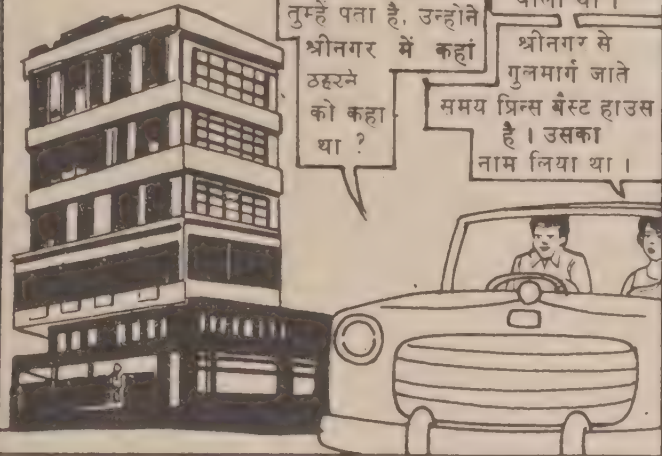
शोभा और विक्रम ने अपने-अपने अटैचीकेस सम्भाले और पहली ही फ्लाईट से श्रीनगर के लिये रवाना हो गये ।

मैं अशोक को अच्छी तरह जानती हूं । वह किसी को फौजी राज देकर देश से गद्दारी नहीं कर सकता ।
तुम्हारी बात मान ही ली जाए तो फिर फाईल नं० ५५५ कहां है । क्या अशोक के लिए हनीमून पर वह फाईल अपने साथ ले जाना जरूरी था ?

श्रीनगर पहुंच कर उन्होंने एक टैक्सी किराये पर ली ।

और सीधे गुलमर्ग की ओर चल दिये ।
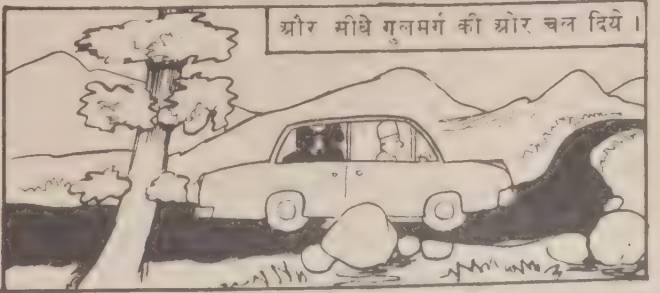
उसी समय, दूसरी ओर पहाड़ की अंधेरी गुफा में डाकू भीम सिंह और उसके साथी मोटू को डाक्टरी सिखा रहे थे।
सरदार, कैप्टन अशोक के बारे में फिर मैसेज आया है।
जितनी बार तुम कहोगे कि मैं डाक्टर नहीं हूं उतनी ही बार हम तुम्हारे सर पर गूमड़ बनाते जायेंगे, निकालो अब शंकर के जिस्म में से गोली।
मैं इसके जिस्म से जान नहीं निकाल पा रहा हूं। तुम मेरे जिस्म से जान नहीं निकाल पा रहे हो। लगता है अपने अपने काम में हम सब ही अनाड़ी हैं।
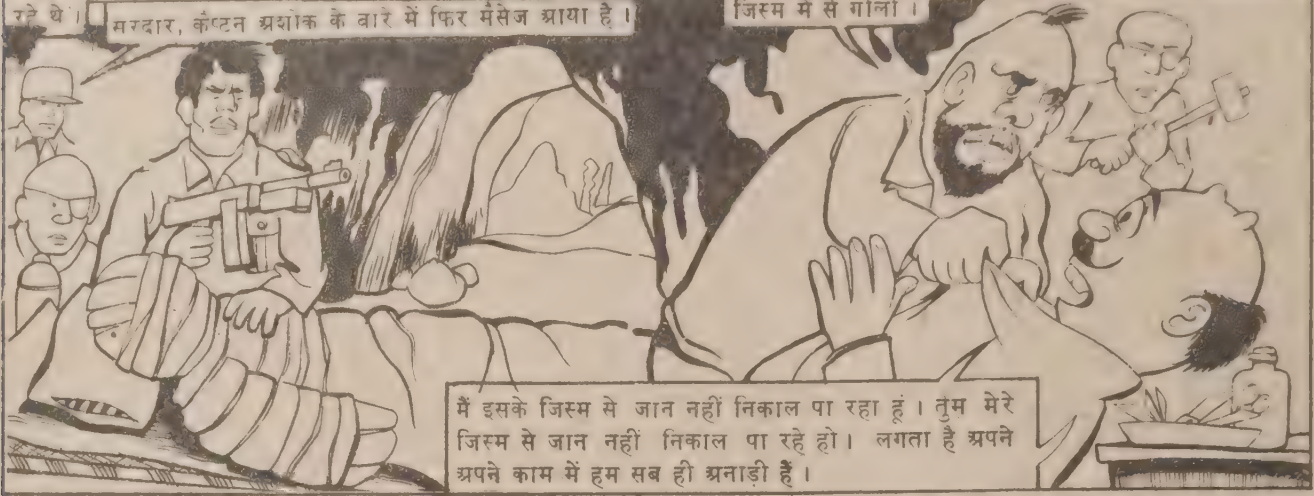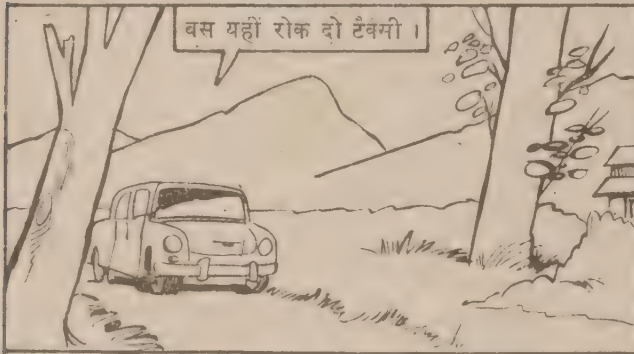
बस यहीं रोक दो टैक्सी।

यही है प्रिंस गेस्ट हाउस।

अन्दर जाते ही उनकी भेंट गेस्ट हाउस के मैनेजर से हुई।
कहिये, कोई कमरा चाहिये आपको ?
एक नहीं, दो कमरे चाहियें।
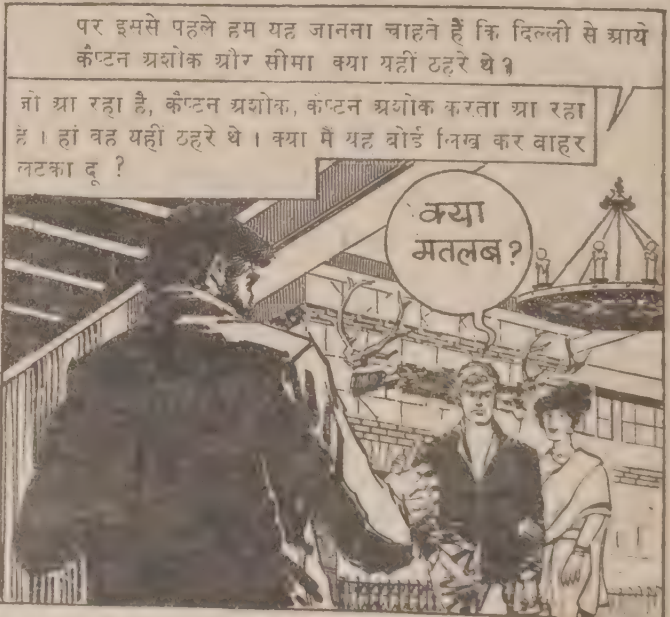
पर इससे पहले हम यह जानना चाहते हैं कि दिल्ली से आये कैप्टन अशोक और सीमा क्या यहीं ठहरे थे ?
जो आ रहा है, कैप्टन अशोक, कैप्टन अशोक करता आ रहा है। हां वह यहीं ठहरे थे। क्या मैं यह बोर्ड लिख कर बाहर लटका दूं ?
क्या मतलब ?
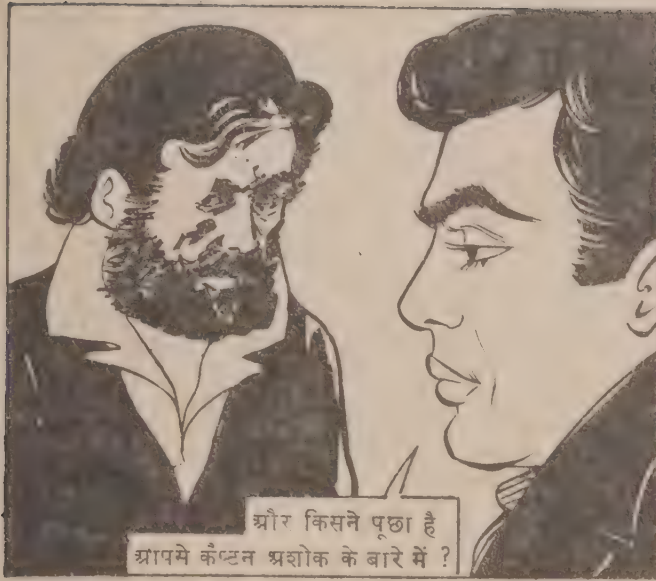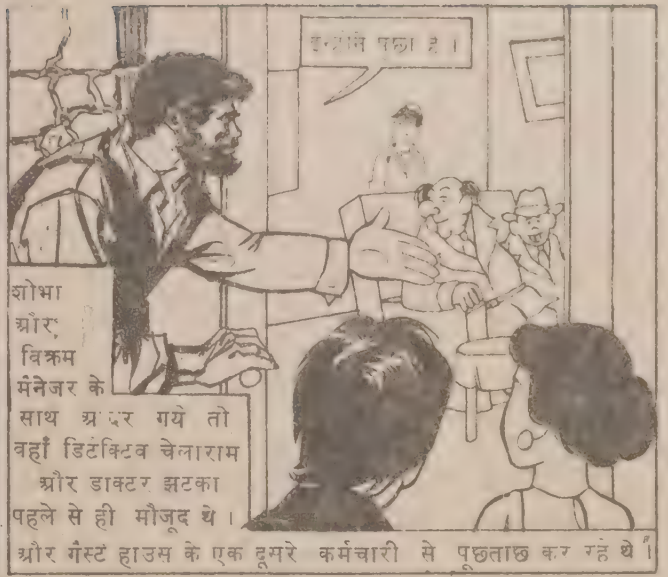
ग्रौर किसने पूछा है
ग्रापसे कैप्टन ग्रशोक के बारे में ?

इन्होंने पूछा है ।
शोभा ग्रौर विक्रम मैनेजर के साथ ग्रन्दर गये तो वहाँ डिटेक्टिव चेलाराम ग्रौर डाक्टर झटका पहले से ही मौजूद थे ।
ग्रौर गैस्ट हाउस के एक दूसरे कर्मचारी से पूछताछ कर रहे थे ।

तो तुम्हें ग्रच्छी तरह याद है, जितने दिन कैप्टन ग्रशोक ग्रौर सीमा यहाँ ठहरे उनसे मिलने यहां बाहर का कोई ग्रादमी नहीं ग्राता था ।
कोई नहीं ग्राता था जी ।
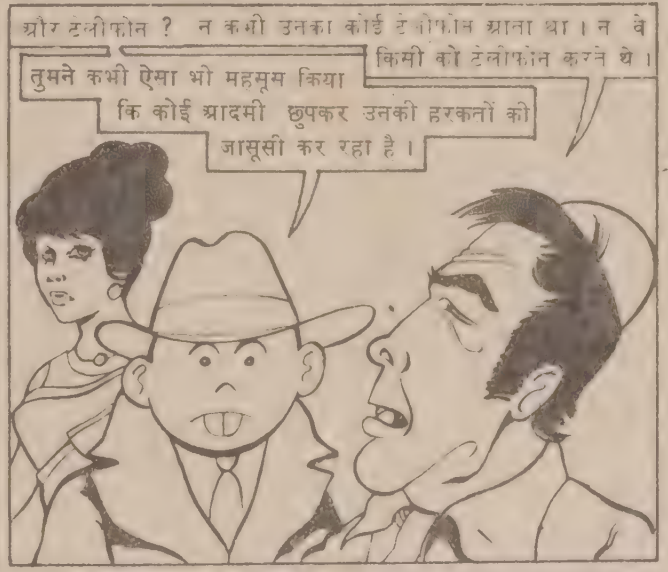
ग्रौर टेलीफोन ? न कभी उनका कोई टेलीफोन ग्राता था । न वे किसी को टेलीफोन करते थे ।
तुमने कभी ऐसा भी महसूस किया कि कोई ग्रादमी छुपकर उनकी हरकतों की जासूसी कर रहा है ।

ग्राप भी कमाल कर रहे हैं साहब, एक कमरा क्या किराये पर ले रहे हैं, सवालों की बौछाड़ किये जा रहे हैं । हम क्या ग्राकर ठहरने वालों के पीछे कैमरे लेकर घूमते हैं या उनकी जन्मपत्रियां खोलकर बैठे रहते हैं ।

लाजबुक में हस्ताक्षर ग्रशोक के ही हैं । वे दोनों यहीं ठहरे, यह बात तो साफ हो गई ।

पर हमारा हिसाब साफ नहीं हुआ । गैस्ट हाउस की पेमैंट किये बगैर और कुछ भी बताये बगैर वे यहाँ से खिसक गये । आप जो इतने सवाल कर रहे हैं, उनका हिसाब आप क्लीयर करेंगे क्या ?

हिसाब भी क्लीयर हो जाएगा । हमारा सामान हमारे कमरे में पहुंचा दीजियें । मुझे जरा एक जरूरी टलीफोन करना है ।
ठीक है ?
हां ठीक है !

मैनेजर के बर्ताव से लगता है इस साजिश में इसी का हाथ है ।

तभी शोभा दरवाजे के पास एक अजीब हाथ देखकर चौंक गई ।
हाथ पर किसी गैंग की निशानी है । यहां तो भारी खतरा है ।

कहीं और नहीं मिला तो मौटू को भी कशमीर में ढूंढ लो !
हां, पहाड़ों में चल कर आवाज़ दो। किसी खाई में पड़ा होगा तो बोल देगा।

शोभा विक्रम के पास पहुंची तो उस समय वह दिल्ली की लाईन मिलाकर शोभा के अंकल से बात कर रहा था ।
हैल्लो मिस्टर गुप्ता, मैं श्रीनगर से विक्रम बोल रहा हूं, यहां काफी गड़बड़ी मालूम होती है, अभी तक केवल इतना ही

पता चल सका है कि अशोक और सीमा प्रिंस गैस्ट हाऊस में ठहरे थे ।
बस इस कहानी को यहीं तक रहने दो, विक्रम और उनकी खोज करना छोड़ दो ।
जी, क्या कहा,
खोज करना छोड़ दूं ।
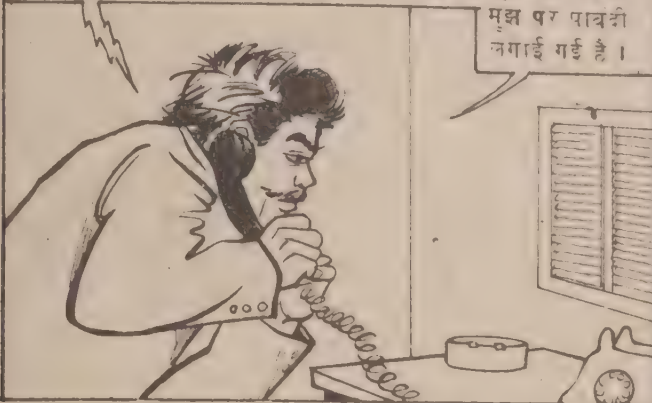
तभी वहाँ एक कार आ कर रुकी। उसमें एक सुन्दर लड़की थी।
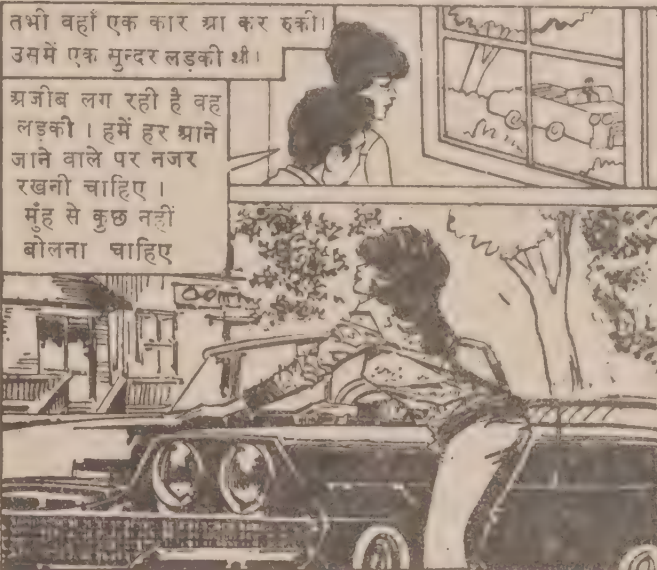
लड़की अन्दर जा कर मैनेजर से मिली तो उसका भी एक ही सवाल था।

ग्रागे की कहानी ग्रागामी अंक में पढ़िये।
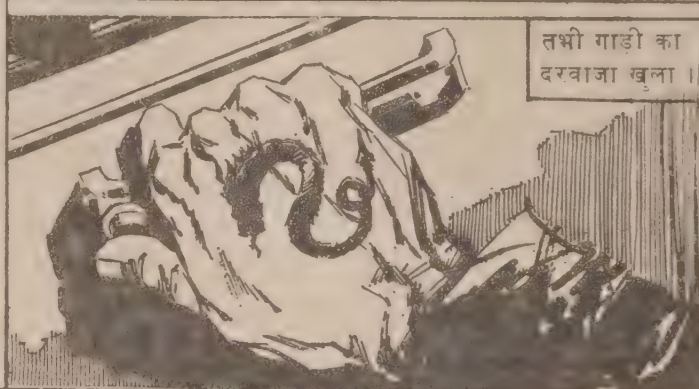
नये धुआंधार बल्लेबाज संदीप पाटिल

पश्चिम क्षेत्र में खेलने वाले युवा संदीप पाटिल शीघ्र ही निकट भविष्य में ऐसी ही ख्याति पाने को तैयार हैं जैसी कपिल देव को
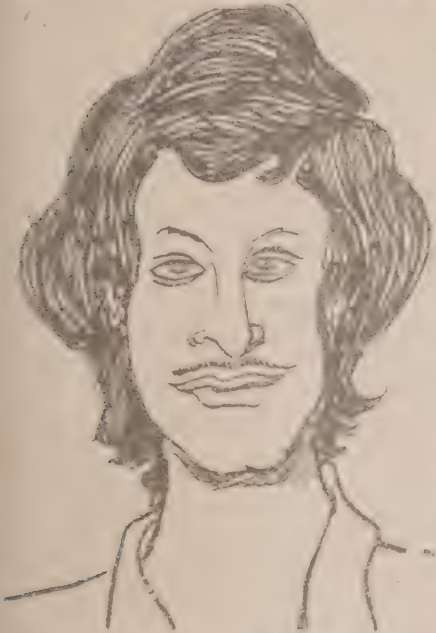
मिली है। सच पूछा जाये तो इस समय देश में धुआंधार बल्लेबाजी करने में संदीप पाटिल को प्रथम स्थान प्राप्त है। वे जिस शक्ति से गेंद को पीटते हैं उसका भारत में सानी नहीं मिलेगा। एक दिन के मैचों के लिये तो संदीप बहुत ही उपयुक्त हैं। जानकार सूत्रों का कहना है कि विश्वकप के लिये संदीप को टीम में शामिल न कर संदीप के साथ ही अन्याय नहीं किया गया बल्कि भारतीय क्रिकेट को चयनकर्ताओं ने धोखा दिया है। संदीप की उपयोगिता का इसी से अंदाजा लग सकता है कि वह मीडियम फास्ट कटर फेंकने वाले बॉलर भी हैं। यह ऐसी ही कहानी हुई जैसी अंधे को क्या चाहिये दो आंखें लेकिन वह दो आंख लेने से इंकार कर दे। विश्वकप के साठ ओवरों के मैच में एक बॉलर केवल बारह ओवर फेंक सकता है। कपिल देव, कर्सन घावरी, वेंकट तथा महेन्द्र अमरनाथ चारों मिल कर केवल ४८ ओवर फेंक सकेंगे! कोई चयन कर्ताओं से पूछे कि बाकी के १२ ओवर कौन फेंकेगा? पांचवे बॉलर बेदी हैं। उन्हें सीमित ओवरों के मैच में खिलाना मूर्खतापूर्ण ही होगा। एक तो वे पहले वाले फार्म में नहीं हैं, प्रायः अस्वस्थ रहते हैं, फील्डिंग रद्दी है तथा इंगलेंड के कप्तान में स्पिन गेंदबाजी, वह भी विश्वकप में आत्मघाती होगी। बेदी रनों का योग भी न दे पायेंगे।

अब आप जरा संदीप पाटिल के रिकार्ड देखिये। दलीप व रणजी ट्राफी मैचों में शानदार प्रदर्शन के बाद टायम्स ऑफ इण्डिया कप में टाटा क्लब की ओर से खेले। (रणजी मैच में संदीप ने दिल्ली के विरुद्ध सेमीफाइनल में १४७ रन बनाये फिर विल्स ट्रॉफी मैच हुआ जिसमें उन्होंने शानदार शतक बनाया) मफतलाल के विरुद्ध संदीप ने ७१ रन बनाये जिसमें ७ चौके थे। पैविलियन आने पर उनके पिता ने उन्हें ताड़ा। संदीप के पिता मधु पाटिल अपने समय के धुआंधार बल्लेबाज थे। पिता को शिकायत थी कि जब वह सात छक्के मार सकने लायक जम गया था तो डबल सेंचुरी तो बननी ही चाहिये थी। जानते हैं दूसरे ही मैच में संदीप ने क्या किया? उन्होंने २८४ रन बनाये। अब आप ही सोचिये ऐसे प्रतिभावान खिलाड़ी को न चुनकर हमारे चयनकर्ताओं ने देश के साथ कितनी गद्दारी की है। सुरेन्द्र अमरनाथ को न चुनना पहली गद्दारी थी। चुना किनको? जो टिप-टिप करने वाले बल्लेबाज थे जिनकी साठ ओवरों के सीमित मैच में कोई आवश्यकता नहीं थी। हमारा अर्थ गायकवाड़ तथा यजुवेन्द्र सिंह से है।

विश्व क्रिकेट कप
मैचों की तारीखें

९ जून १९७९ से विश्व कप के मुख्य मैच शुरू हैं। इससे पहले २२ मई से उन देशों के मुकाबले होंगे जो अब तक मुख्य क्रिकेट खेलने वाले देशों में नहीं गिने जाते हैं इन्हें तीन वर्गों में बांटा गया है। इन देशों की टीमें पहले आपस में खेलेंगी और दो चोटी की टीमें मुख्य मैचों में भाग लेने के लिए चुनी जायेंगी। इन्हें एसोसियेट A और एसोसियेट B कहा जायेगा (इन देशों को अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट क्लब के एसोसियेट मैम्बर माना जाता है) इन देशों के तीन वर्ग बनाये गये हैं।

(१) पू० अफ्रीका, पापुआ न्यूगिनी, अर्जेन्टीना, सिंगापुर और बरमूदा।

(२) डेनमार्क, फिजी, मलेशिया, कनाडा व बंगला देश।

(३) इजरायल, अमरीका, हॉलेंड, जिब्राल्टर व श्रीलंका।

मुख्य मैचों की तिथियां व वर्गीकरण

ग्रुप A—वेस्टइंडीज, भारत, न्यूजीलेंड तथा एसोसियेट A

ग्रुप B—इंगलेंड, आस्ट्रेलिया, पाकिस्तान तथा एसोसियेट B

मैचों की तिथियां—

९ जून—आस्ट्रेलिया विरुद्ध इंगलेंड लार्डसमें, वेस्टइंडीज विरुद्ध भारत ऐजबेस्टनमें, पाकिस्तान विरुद्ध एसोसियेट B हैडिंगले में तथा न्यूजीलेंड विरुद्ध एसोसियेट A ट्रेंटब्रिज में।

१३ जून—भारत विरुद्ध न्यूजीलेंड हैडिंगलेमें, इंगलेंड विरुद्ध ऐसोसियेट B ओल्ड ट्रेफर्डमें वेस्टइंडीज विरुद्ध ऐसोसियेट A ओवल में, आस्ट्रेलिया विरुद्ध पाकिस्तान ट्रेंटब्रिज में।

१६ जून—आस्ट्रेलिया विरुद्ध ऐसोसियेट B ऐजबेस्टन में इंगलेंड विरुद्ध पाकिस्तान हैडिंगले में, भारत विरुद्ध ऐसोसियेट A ओल्ड ट्रेफर्ड में, वेस्टइंडीज विरुद्ध न्यूजीलेंड ट्रेंटब्रिज में।

२० जून—सेमीफाइनल ओल्ड ट्रेफर्ड व ओवल में।

२३ जून—फाइनल लार्डस मैदान में।

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

जूडो कैराटे कैसे सीखें?

याद रखें हथेली के छोटी उंगली वाले किनारे के धारदार वाले इस भाग के प्रहार को 'कैराटे चाप' कहते हैं। प्रहार करते समय सीधा पैर जो आगे निकला हुआ है उस पर अपने शरीर का लगभग पूरा वजन डालते हुए ही 'कैराटे चाप' का प्रहार करें। आपके शरीर का यह वजन आपके प्रहार करने की शक्ति को सहायता पहुँचाता है। यह जरूरी नहीं है कि आप दायां पैर ही आगे की ओर रखें या दाएं हाथ की हथेली का ही प्रहार के रूप में प्रयोग करें। आप चाहें तो बायां पैर आगे रखकर बाएं हाथ की हथेली का भी प्रहार के रूप में उपयोग या प्रयोग कर सकते हैं यह आप की सुविधा पर निर्भर है। लेकिन यह ध्यान अवश्य रखें कि दायां पैर यदि आगे रखें तो दाएं हाथ के 'कैराटे चाप' का उपयोग करें और यदि बाएं पैर को आगे रखें तो बाएं हाथ के 'कैराटे चाप' का ही प्रयोग करें।

ऊपर वाली 'हार्स पोजीशन' तब के लिए है जब विरोधी पर आपको आक्रमण करना पड़ जाये।

टी (T) के आकार की स्थिति

शरीर को 'T' आकार की स्थिति में उस समय रखा जाता है जबकि यह मालूम हो जाए कि विरोधी का आक्रमण आप पर होने वाला है। जैसे ही आपको यह शका हो कि विरोधी आप पर आक्रमण करने वाला है तो तत्काल ही इस स्थिति में आ जाइये। आक्रमण की आशंका होते ही बिना एक क्षण की देर किए आपको 'T' आकार की स्थिति में आ जाना चाहिए ताकि आप अपना बचाव कर सकें। 'T' आकार में आने के लिए तन-कर खड़े हो जाइए। दायां पैर आगे तथा बायां पैर पीछे होना चाहिए। ये दोनों पैर आगे-पीछे की स्थिति में होने चाहिएं। पैरों के बीच का अंतर लगभग एक फुट का रखिए। दायें हाथ को मोड़कर आगे की ओर अपनी गर्दन के सामने तथा गर्दन की ऊंचाई तक ही रखिए। हथेली खुली हो। बायां हाथ बाईं ओर के कूल्हे के पास कमर की ऊंचाई तक मुड़ा होना चाहिए और हाथ कीमुट्ठी बंधी होनी चाहिए। ध्यान रहे कि आपका मुंह तो विरोधी के बिल्कुल सामने रहे लेकिन छाती व पेट का हिस्सा बाईं ओर की दिशा में घूमा हुआ हो।

ऐसी स्थिति में आपके शरीर का छाती व पेट का कोमल भाग दुश्मन की मार से बचा रहता है और आपका शरीर भी सन्तुलन में तथा ठोस स्थिति में रहता है। इस स्थिति में खड़े रहते हुए आप विरोधी के किसी भी आक्रमण का सामना तुरन्त कर सकते हैं। यदि विरोधी आपकी छाती या मुँह पर आक्रमण करता है तो आप दायें हाथ की कोहनीया दायें हाथ के 'कैराटे चाप' द्वारा विरोधी का आक्रमण विफल कर उस पर उलटकरमारकर सकते हैं। साथ ही दायें पैर का घुटना, जो आगे की ओर है, उसका
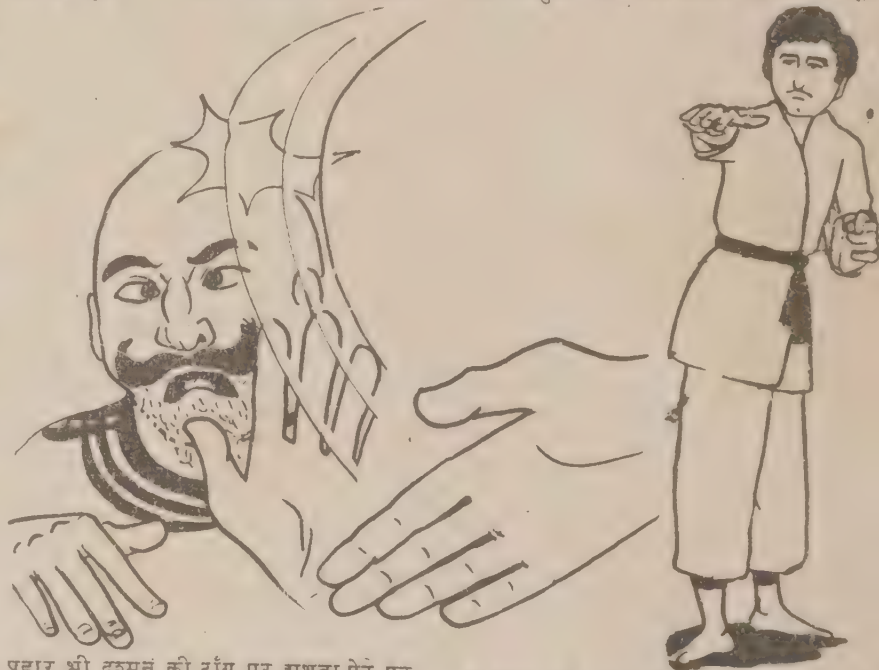
प्रहार भी दुश्मन की टाँग पर अथवा पेट पर कर सकते हैं। यदि विरोधी आपके पेट पर आक्रमण करता है तो आप बायें हाथ के घूंसे से प्रहार का जवाब दे सकते हैं तथा उसी तरह दाएं पैर के घुटने का प्रयोग भी कर सकते हैं। याद रखिए प्रहार के या बचाव करने के तुरन्त बाद फिर इसी 'T' स्थिति में आ जाना चाहिए।

कैराटे के हथियार—आपके हाथ-पैर

कैराटे का अर्थ तो आप जान ही चुके हैं—खाली हाथों से लड़ना। चूंकि कैराटे में हम किसी भी हथियार का उपयोग नहीं करते हैं। इसीलिए हमें अपने हाथ-पैरों को अभ्यास द्वारा इतना मजबूत व कठोर बना लेना चाहिये कि हम उनका इस्तेमाल हथियार के रूप में कर सकें। इसका अर्थ यह है कि हमें अपने हाथ-पैरों के प्रत्येक भाग को, यहाँ तक कि एक-एक उंगली को इतना शक्तिशाली बना लेना चाहिए कि यदि हम विरोधी के शरीर के किसी हिस्से पर अपनी एक या दो उंगली का प्रहार भी कर दें तो वह तिलमिला उठे। यह तभी सम्भव है, जब हमारा अभ्यास निरन्तर व सही रूप में हो।

आपका मुख्य शस्त्र—हाथ

कैराटे में दक्ष होने के लिए यह अति आवश्यक है कि हमारे हाथ का उंगली से लेकर भुजा तक का प्रत्येक हिस्सा मजबूत व कठोर हो। मांस-पेशियाँ सख्त हों, ताकि विरोधी का कोई भी आक्रमण हाथ पर बिना हानिके या पीडा के सह सकें। केवल घूंसे तथा 'कैराटे चाप' को ही मजबूत बना लेना काफी नहीं है। घूंसे या 'कैराटे चाप' को शक्तिशाली बनाने के लिए हमें हाथ की कलाई, कोहनी तथा भुजा को भी मजबूत बना लेना चाहिए, ताकि इनके सहयोग से घूंसे या 'कैराटे चाप' का प्रहार और भी शक्तिशाली बन सके।

प्र० : समय लिखने के साथ ए० एम० (A M.) तथा पी० एम० (P. M.) का प्रयोग किया जाता है, इसका अर्थ क्या है ?

उ० : दोपहर से पहले और दोपहर बाद का समय बताने के लिये ए० एम० तथा पी० एम० लिखा जाता है परन्तु इसका वास्तविक अर्थ क्या है ? जैसा कि विदित है पृथ्वी के घूमने से सूर्य और तारे घूमते हुए दिखाई देते हैं। सूर्य के पूरब में उदित होने पर दिन आरम्भ होता है और पश्चिम में डूबने पर समाप्त होता है, इन दो अवस्थाओं के बीच जब सूरज सबसे ऊंचा चढ़ा हुआ होता है तो आधा दिन बीत चुका होता है और इसी से मनुष्य आदि काल से ही समय का अनुमान लगाता चला आ रहा है। रात को तारों को देखकर ही समय का अनुमान लगाया जाता था। समय के अनुमान लगाने में सबसे महत्वपूर्ण, दोपहर के समय का ठीक अनुमान लगाना है सबके लिए ही चाहे वो कहीं हो, दोपहर उसी समय होती है जब सूरज ठीक सिर पर होता है। अब हम एक काल्पनिक रेखा के बारे में सोचते हैं. मेरीडियन या याम्योत्तर रेखा जो कि आकाश के आरपार क्षितिज के उत्तरीय छोर से दक्षिणी छोर तक खिंची हो। जब सूरज हमारी इस काल्पनिक मेरिडियन को पार करेगा तो हमारी दोपहर होगी। सूर्य के इस रेखा के पूर्वीय छोर पर होने पर दोपहर से पहले का समय होगा और रेखा पार करने पर दोपहर बाद का समय होगा।

लेटिन भाषा में दोपहर को मेरीडीज कहते हैं जो शब्द मेरिडियन शब्द से लिया गया है इसलिए ए० एम० से तात्पर्य है ऐन्टी मेरीडियन अर्थात दोपहर से पूर्व और पी० एम० का तात्पर्य है पोस्ट मेरिडियन अर्थात दोपहर बाद।

संसार के समय खंड लगभग पन्द्रह डिग्री अक्षांस चौड़े हैं, ये दूरी सूरज लगभग एक घण्टे में पार करता है। समय के एक खण्ड में रहने वाले संसार के सब लोगों की दोपहर एक ही समय होती है और समय के एक खण्ड से दूसरे में जाने पर एक घण्टे का अन्तर आ जाता है।

प्र० : वीरता तथा विशिष्ट सेवा के मैडल प्रदान करने का चलन संसार में कब से आरम्भ हुआ ?

जितेन्द्र नारायण त्रिपाठी, गोरखपुर

उ० : पदक तथा मेडल सैनिक और असैनिकों को उनकी अनोखी वीरता, विशिष्ट सेवा तथा महान कार्यों और उपलब्धियों के लिये प्रदान किये जाते हैं। अधिकतर सैनिक पदक गोल होते हैं जबकी दूसरे सम्मान प्रदान करने वाले मेडल तारे जैसे या क्रास जैसे होते हैं।

इतिहास से विदित होता है कि सम्मान प्रदान करने की प्रथा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। मिश्र के प्राचीन बादशाह अपनी प्रजा को स्वर्णमक्खी देकर सम्मानित किया करते थे। चीन में मोर के पंख टोप में लगाने के बैज तथा विशेष प्रकार के लबादे देने का चलन था। आदिकाल के यूरोप के राजा "अंगूठी प्रदान करने वाले" कहलाते थे क्योंकि वे अपने सेनापतियों को विशेष वीरता दिखाने पर अंगूठी प्रदान कर सम्मानित करते थे।

ये सम्मान अधिकतर राजाओं तथा शासकों के निकट रहने वालों को ही मिला करते थे जैसा कि इतिहास से पता चलता है अधिकतर राजा युद्ध में अपनी सेनाओं का नेतृत्व स्वयं ही करते थे इसलिए वे वीरता तथा लम्बी वफादार सेवा के लिए ये सम्मान प्रदान किया करते थे। जब किसी शत्रु भूमि पर विजय पाने का समाचार प्राप्त होता था तो इस युद्ध का नेतृत्व करने वाले सेनापति को राजा इनाम तथा सम्मान अवश्य देते थे।

धीरे-धीरे सम्मान प्रदान करने का चलन यूरोप में भी आरम्भ हो गया इन सम्मानों में कुछ में तो पदक प्रदान किए जाते थे जबकि अन्यों को पाने के लिए किसी विशेष योग्यता की आवश्यकता नहीं होती थी। ये सम्मान या पदक राजा अपनी इच्छा से ही देते थे।

सन् १७०० में सबसे पहले विशेष सैनिक सम्मान देने आरम्भ हुए थे। जार्ज वाशिंगटन ने सन् १७८२ में आजकल "परपल हार्ट कहलाने वाला सैनिक योग्यता के लिए "सैनिक पदक" निकाला था। फ्रांस में नेपोलियन प्रथम ने सन् १८०२ में फ्रांस का उच्चतम "सैनिक पदक" "लेएन-डी-होमर" आरम्भ किया था।

बरतानिया का विक्टोरिया क्रास सन् १८५६ में सैनिक वीरता के लिए आरम्भ किया गया था भारत में भी स्वाधीनता प्राप्त होने के बाद नये वीरता तथा विशिष्ट सेवा के सम्मान के लिए पदक प्रदान किए जाते हैं। प्राचीन भारतीय नरेश भी अपने सेनापतियों को विशेष वीरता दिखाने पर धन इत्यादि प्रदान किया करते थे।

आजकल संसार के सब देशों में ही विशेष सेवा के लिए भिन्न-भिन्न पदक प्रदान कर सम्मानित किया जाने लगा है। इनमें सैनिक वीरता से लेकर विशिष्ट जन सेवा, विज्ञान, कला अथवा दूसरे कार्यों में विशेष निपुणता तथा उपलब्धियों के लिए प्रदान किये जाते हैं।

क्यों और कैसे
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

आपको पता लगता है आप सचमुच बूढ़े हो चुके हैं..
PHOOO
जब आप कहीं जाते हैं तो नाक सबसे पहले मंजिल पर पहुंचती है। (कूबड़ के कारण)
जब कुछ शोर सुनाई पड़े और आपको पता न लगे कि पॉप संगीत बज रहा है या दो बिल्लियां आपस में लड़ रही हैं।
जब आप खाना खाने बैठते हैं और टेबल पर खिचड़ी वाला कटोरा आप की तरफ सरकाया जाता है। और पकवानों के प्लेट आपको छोड़ आगे सरकते हैं।
जब आपके पास से फेशनेबल लड़की गुजरती है और आपके मुंह से सीटी की बजाय 'हरि ओ३म तत्सत्' निकलता है।
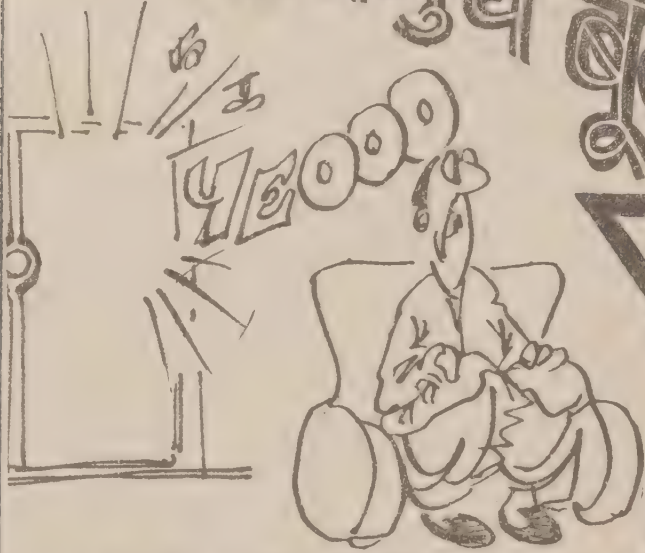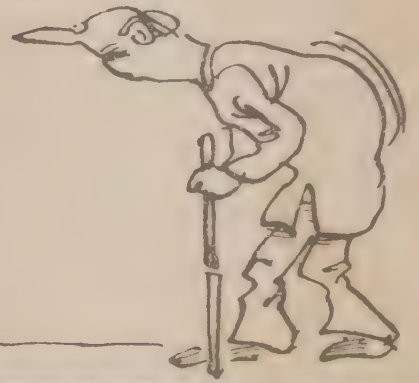
जब कोई आप से लड़ पड़ता है तो आपके दांत तोड़ने की धमकी नहीं देता। (दांत तो पहले ही झड़ चुके हैं)
जब आप सड़क पर कोई सिक्का पड़ा देखते हैं तो उठाते समय लगता है कि सड़क पहले की अपेक्षा अधिक नीची हो गयी है।
जब आपको अखबारों में भोग-किरिया चौथ के कालम सबसे अधिक रोचक लगते हैं।
जब आपको जीवन बीमा निगम से सूचना मिलती है कि आपके बीमे की आखिरी किश्त प्राप्त हो गयी है आपको और किश्तें नहीं भेजनी पड़ेंगी।
जब आपको होंठ हिलते दिखाई देते हैं परन्तु अवाज सुनाई नहीं पड़ती जैसे कि मूक फिल्म देख रहे हों।

एक ब्राह्मण था। उसकी दो स्त्रियां थीं। पहली स्त्री मर चुकी थी। उसके दो बच्चे थे—एक लड़का, एक लड़की। दूसरी स्त्री की एक लड़की थी। वह लड़की बद-सूरत और कानी थी, पर सौतेली लड़की बहुत सुन्दर थी। उसके बाल सुनहरे थे। इसलिए पास-पड़ोस के लोग उसे 'स्वर्णकेशी' कहकर पुकारते थे। उसकी मां मर चुकी थी। इसलिए सौतेली मां का व्यवहार उन दोनों भाई-बहनों के प्रति बहुत बुरा था। स्वर्णकेशी के भाई को तो उसने मार-मारकर भगा दिया था। स्वर्णकेशी को भी वह चैन से नहीं रहने देती थी। उसने एक मेंड़ा पाल रखा था। स्वर्णकेशी को रोज मेंड़ा चराने के लिए भेज देती लेकिन उसकी अपनी लड़की मौज मारती।

स्वर्णकेशी सौतेली मां के इस व्यवहार को समझती थी। प्यार तो दूर रहा, सौतेली मां उसे भरपेट खाना भी न देती थी। कभी स्वर्णकेशी सोचती—'मेरी मां जिन्दा होती तो···' और उसकी आंखों में आंसू आ जाते। एक दिन वह यों ही रो रही थी कि मेंड़े ने उसे देख लिया।

उसने पूछा, 'तू रोती क्यों है, बहन ?'

'अपने दुर्भाग्य पर !' वह और भी रोने लगी, 'मेरी सौतेली मां मुझे प्यार नहीं करती। अपनी बेटी को खाना देती है, मुझे नहीं देती।'

'कोई बात नहीं !' मेंड़ा बोला, जैसे कि पहले से ही वह बात समझता हो, 'मेरा कहा मानो। उस पेड़ की जड़ को खोदो, नीचे एक डंडा मिलेगा। उस डंडे से मेरे सींग पर चोट करो।'

स्वर्णकेशी की समझ में कुछ नहीं आया, पर मेंड़े ने बाध्य किया। आखिर उसने पेड़ के नीचे खोदना शुरू किया। डंडा मिला, एक चोट मेंड़े के सींग पर मारी तो फल, मेवे, मिठाई आदि कई खाने की चीजें निकलीं। स्वर्णकेशी ने खूब छककर खाया। बस, तब से वह रोज ऐसा ही करती और खूब खुश रहने लगी। फिर तो वह कुछ-कुछ तन्दुरुस्त भी होने लगी। रूप भी निखरने लगा।

'बात क्या है ?' एक दिन उसकी सौतेली मां ने सोचा—'मैं इसे खाना भी नहीं देती, इससे इतना काम भी लेती हूं, फिर भी यह इतनी मोटी होती जा रही है।' फिर उसने अपनी लड़की को बुलाया और बोली, 'तुझे क्या हो रहा है ? इतना खिलाती हूं, फिर भी तू मरने को होती जा रही है। स्वर्णकेशी को तो देख···' और दूसरे दिन से उसने अपनी बेटी को भी उसके साथ लगा दिया और समझा दिया कि मालूम करना कि वह क्या खाती है, और क्या करती है।
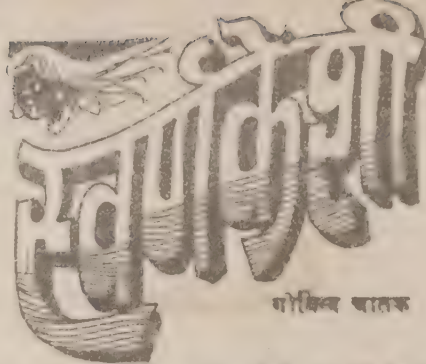
स्वर्णकेशी सब समझती थी। सौतेली बहन हर वक्त साथ रहती थी। इसलिए मेंड़े के पास जाने की उसे हिम्मत न पड़ती थी—शिकायत का डर जो था। फिर तीन-चार दिन ऐसे ही बीत गए। आखिर जब एक दिन भूख ने उसे बहुत सताया तो स्वर्णकेशी ने सौतेली बहन को टालने की बहुत कोशिश की और एक बार किसी बहाने उसे दूर भेज ही दिया। वह चली तो गई, पर थी बहुत होशियार—आंखें उसकी पीछे ही लगी रहीं। उसने स्वर्णकेशी को मेंड़े के सींग पर डंडा मारते और मिठाई खाते देख लिया। लौटते ही बोली, 'केशी दीदी, तू क्या खा रही है ? मुझे भी दे न !' केशी ने थोड़ी मिठाई उसे भी दे दी।

संध्या को दोनों घर लौटीं। मां ने हमेशा की तरह अपनी बेटी से पूछा, कुछ मालूम हुआ ?

'हां, मां !' बेटी तो पहले से ही कहने को तैयार थी। बोली, 'केशी मिठाई खाती है।' और उसने सारी बात बता दी कि किस प्रकार मेंड़े के सींग पर डंडा मारकर वह मिठाई खाती है। सौतेली मां मेंड़े पर बिगड़ी, 'उसे जिन्दा नहीं छोड़ूंगी।' उसकी बेटी इस पर बहुत खुश हुई।

स्वर्णकेशी तभी से उदास रहने लगी। वह मेंड़े को सदा की भांति चराने तो गई पर दिन भर पेड़ के नीचे बैठी रोती रही। उस दिन उसने मिठाई भी नहीं खायी। मेंड़े ने उससे पूछा, 'तू उदास क्यों है, बहन ?'

स्वर्णकेशी बोली, 'भैया, मैं अभागिन हूं। सौतेली मां को सब कुछ मालूम हो गया है। वह तुम्हें मार डालना चाहती है।'

मेंड़े ने कहा, 'मारने भी दो, केशी ! तेरे लिए मैं तब भी नहीं मरूंगा। ये सब मेरा मांस खाएंगे पर तू न खाना तू मेरी हड्डियों को उठाकर एक जगह पर गाड़ देना। जब किसी चीज की जरूरत हो, उसे खोदना—तेरी मनचाही चीज तुझे मिलेगी।'

मेंड़ा मारा गया। स्वर्णकेशी ने वैसा ही किया। अब उसकी जिन्दगी और भी बुरी हो गई। पहले तो वह मेंड़े के साथ वन में जाकर मन बहला लेती थी, अब उसे घर में ही काम करने पड़ते थे। खाने-पीने का भी वही हाल था—रो-रोकर अब उसके दिन बीतते थे। उसका कोई अपना न था।

उसकी सौतेली मां और बहन तो मजे से बैठी रहती थीं और उसको कोई न कोई काम दे दिया जाता था। एक दिन की बात है पास ही शहर में मेला लगा। दोनों मां-बेटी सजकर मेले में चल दीं किन्तु केशी के लिए खूब सारे चावलों में कंकड़ मिलाकर साफ करने को छोड़ गईं। मेले में जाने की केशी की भी इच्छा थी पर उसके वश की बात न थी। वह चावल साफ करती रही और रोती रही। इतने में कुछ गौरैया उड़ती हुई उधर आयीं, उन्होंने उसे रोते देखकर पूछा, "बहन, रोती क्यों है ?"

केशी ने उत्तर दिया, "आज इतना बड़ा मेला लगा है। मेरी सौतेली मां और बहन तो मेले में चली गई हैं पर मुझे इतने चावल साफ करने का काम दे रखा है।"

चिड़ियों ने कहा, 'तू फिक्र न कर। तेरे बदले का काम हम कर देंगी।"

गौरैयों का झुंड कंकड़ अलग करने लगा। स्वर्णकेशी मेले में जाने को तैयार हुई पर उसके पास अच्छे कपड़े न थे। तभी उसे मेंड़े का कहा याद आया। वह दौड़ती हुई गढ्ढे के पास गई। खोदा तो उसमें से सुन्दर-सुन्दर कपड़े, गहने, सोने के जूते और एक घोड़ा निकला। केशी ने जी भरकर शृंगार किया और घोड़े पर बैठकर मेले में चल दी।

राजकुमार भी उसी मेले में आया।

हुआ था। उसने स्वर्णकेशी को देखा तो देखता ही रह गया। उसकी कमल की पंखुड़ियों-सी आंखें, गुलाब-से गाल और सुनहरे बाल राजकुमार के हृदय पर छा गए। उसने अपने सिपाहियों को बुलाया और हुक्म दिया, 'मालूम करो यह लड़की कौन है ? हम उससे ब्याह करेंगे।' सिपाही दौड़े। केशी घबराई। सोचा—'कहीं इन्हें सौतेली मां ने तो नहीं भेजा। उसने घोड़ा घर की ओर दौड़ाया। पर इसी बीच उसका सोने का एक जूता उसके पैर से छूट गया। सिपाही उसे तो नहीं पा सके पर उसका एक जूता उठाकर वापस चले आए। राजकुमार ने उन्हें बहुत डांटा और फिर हुक्म दिया, 'जाओ, सारे नगर में घूमो। जिसके पैर में यह जूता ठीक आये, उसी के साथ मेरी शादी होगी।'

सिपाही जूता लेकर चल पड़े। वे घर-घर में जाते और जूता हर लड़की के पैर में पहनाते। पर वह किसी के पैर में ठीक ही न आता। स्वर्णकेशी के घर में भी सिपाही पहुंचे। सौतेली मां ने अपनी बेटी के पैरों में जूता पहनाया पर वह उसके पैरों में आया ही नहीं। केशी को जान-बूझकर जूता नहीं पहनाया। पर सिपाहियों ने उसे देख लिया। उन्होंने कहा, "इसे भी पहनाओ !'

सौतेली मां ने कहा, 'इसके पैर में नहीं आयेगा। और रानी होने की इसकी लियाकत कहां ! यह तो हमारी नौकरानी है।' पर सिपाही नहीं माने। डरते-डरते स्वर्णकेशी ने जूता पहना और उसके पैर में ठीक आ गया। सिपाही बहुत खुश हुए—किसी के पैर में तो जूता ठीक आया। चलो, जान बची।

स्वर्णकेशी का विवाह राजकुमार से हो गया। सौतेली मां कुढ़कर रह गई। फिर भी उसे चैन न मिला। वह हर रोज उसे मारने के उपाय सोचती रही। आखिर उसने अपनी बेटी को पट्टी पढ़ानी शुरू की और एक दिन केशी को सन्देश भेजा कि मुझे और तेरी छोटी बहन को तेरी याद सता रही है, एक बार मिलने आ जा।

स्नेहवश केशी मायके आयी। अब की बार सौतेली मां उससे विशेष प्रेम दिखाने लगी। उसकी बेटी भी हमेशा केशी के पीछे-पीछे लगी रहती, उसकी बड़ाई करती और उसे फुसलाती। एक दिन वे साथ-साथ घूमने

निकलीं। रास्ते में ताल था। दोनों वहां बैठ गईं। फिर बातों ही बातों में सौतेली मां की लड़की ने कहा, 'केशी दीदी, तू कितनी सुन्दर है ! जरा पानी में अपनी परछाईं देख तू कैसी लग रही है, जैसे आकाश में चन्दा !'

केशी मुस्कराई। मालूम हुआ जैसे फूल झड़े हों।

सौतेली मां की लड़की बोली, 'ये कपड़े, ये गहने तुझ पर कैसे सोहते हैं ! जरा मुझे दे, दीदी ! तू मेरे कपड़े पहन ले, और मैं तेरे ! देखूं मैं कैसी लगती हूं ?'

इसे विनोद-मात्र समझकर केशी ने अपने कपड़े उसे पहना दिए, उसके कपड़े आप पहन लिए। सौतेली बहन फिर भी सुन्दर नहीं लग रही थी। केशी के लिए सौन्दर्य की क्या कमी थी।

'केशी दीदी !' उसने कहा, तू मेरे कपड़ों में भी कितनी सुन्दर लग रही है ! जरा देख तो पानी में अपनी सूरत !'

स्वर्णकेशी पानी में परछाईं देखने के लिए जैसे ही झुकी, पीछे से सौतेली मां की बेटी ने उसे धक्का देकर डुबा दिया और खुद राजमहल में चली आयी, जैसे वह ही स्वर्णकेशी हो। वहां घूंघट निकालकर बैठ गई। राजकुमार ने देखा तो ताज्जुब में पड़ गया। बोला, 'तू बोलती क्यों नहीं, केशी ? रूठी-सी क्यों बैठी है ?' पर कुछ उत्तर न मिला। केवल वह कुछ क्षणों तक सकपकाती रही। राजकुमार को सन्देह हुआ तो उसने घूंघट खींचा। एक दूसरी ही शक्ल दिखाई दी। कुछ देर तक वह भ्रम में पड़ गया।

'तू काली कैसे हो गई, केशी ?' उसने पूछा।

उत्तर मिला' 'धूप सेंकने से।'

फिर राजकुमार ने उसकी कानी आंख देखी तो पूछा, 'और आंख में क्या हुआ ?'

'कौवे ने चोंच मार दी।'

राजकुमार सारी बात भांप गया। उसने उसे खूब पीटा और पूछा, 'बता स्वर्णकेशी कहां है ?' आखिर उसने सारा भेद बता दिया। राजकुमार ने स्वर्णकेशी की खोज में जगह-जगह सिपाही भेजे। उन्होंने उसे ताल के किनारे बेहोश पड़ा पाया। सिपाही उठाकर राजमहल में ले आये। दवा दारू हुई और केशी ठीक हो गई। राजकुमार ने राजधानी में खूब खुशियां मनाईं।

इसी बीच स्वर्णकेशी का भाई ताल के पास पानी पीने आया। उसने पानी में हाथ डाला तो हाथ में सोने के बाल आए। उसने बाल देखे और वर्षों की याद ताजा हो उठी। ये बाल तो मेरी बहन के जैसे हैं।' उसने सोचा—'ये कहां से आये ? कहीं वह मर तो नहीं गई। वह बहन की याद में बावला हो उठा। रोता-कलपता सौतेली मां के पास गया और बोला, 'मेरी बहन कहां है ?' सौतेली मां ने जवाब दिया, 'मर गई।' भाई को विश्वास आ गया। उसने मेंढक की खाल की डफली बनाई और उसे बजाते हुए जगह-जगह बहन के विरह में गाना गाने लगा—

'मेंढक मारकर मैंने डफली बनाई,
अपनी बहन स्वर्णकेशी को कहां जाकर देखूं ?'

वह गली-गली, कूचे-कूचे गाता फिरा। एक दिन वह बहन के राजमहल के पास से इसी तरह गाता हुआ गुजरा। बहन ने भाई की आवाज पहचान ली। उसने उसे लेने के लिए बांदी भेजी। बांदी ने कहा, 'रानी ने बुलाया है।' भाई बोला, 'मुझे क्यों ले जाते हो ? मैंने किसी का क्या बिगाड़ा है ?' खैर उसे पकड़कर लाया गया। भाई ने बहन को देखा, बहन ने भाई को। दोनों एक-दूसरे के गले लग गए।

राजकुमार इस मिलन से बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने स्वर्णकेशी के भाई को उसी दिन से अपना मंत्री बना लिया और वे प्रेम से रहने लगे। ●
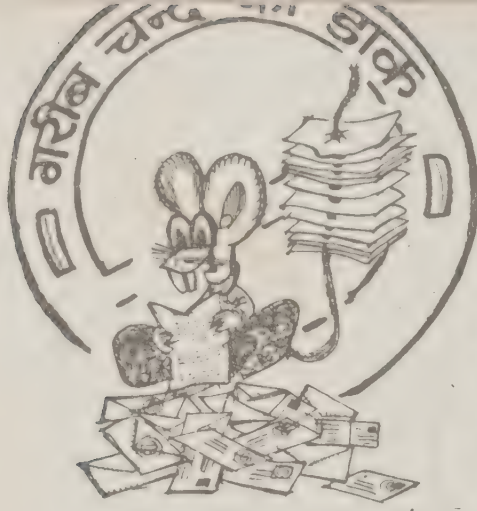
शिवन लाल खत्री—रायपुर : गरीब चन्द जी, लोग शराब क्यों पीते हैं, जुआ क्यों खेलते हैं ?

उ० : जुये की बात तो यह है कि जिन्दगी खुद ही एक जुआ है और रही बात शराब की सो शराब तरक्की का सबसे आसान तरीका है। एक फौजी जवान बहुत पीता था। एक दिन उसे कैप्टन ने बुला कर कहा, 'तुम इतनी शराब क्यों पीते हो ? अगर तुम में यह बुरी आदत न होती तो तुम तरक्की कर गए होते। अब भी तुम छोड़ दो तो एक दो साल में हवलदार बन सकते हो।' फौजी ने जवाब दिया, 'साहब, मैं हवलदार क्यों बनूं ? तीन पैग चढ़ाते ही सीधे कर्नल बन जाता है।'

राजेश खन्ना 'पप्पू'—लुधियाना : गरीब चन्द जी, मुझे एक लड़की ने लव लैटर लिखा है लेकिन वो अपना पता लिखना भूल गई है अब आप ही बताइए उसे जवाब कैसे दूं ?

उ० : यही तो भेद की बात है। वह पता लिखना नहीं भूली जान बूझ कर नहीं लिखा है। प्रेम एक पहेली है उसमें ऐसी-ऐसी कई पहेलियां हल करनी पड़ती हैं। आप स्वयं को कुत्ता समझ लीजिए और उस गुमनाम प्रेमिका को मिट्टी में दबी हड्डी ! बस अब सूंघ-सूंघ कर हड्डी खोद निकालिए।

योगेश कुमार अग्रवाल—डीमापुर : बिल्ली, पाल कर भी चूहों से ना मिला छुटकारा, आप ही बतायें उपाय मैं तो हर ओर से हारा।

उ० : बिल्ली जानती है अगर वह ज्यादा चूहे खा गई तो आचार्य विनोबा भावे मूषक हत्या बन्द करवाने के लिए आमरण अनशन कर देंगे, वह भावे जी का आदर करती है।

सुरेश माया बुधवानी—रायपुर : पिलपिल-सिलबिल के साथ आप हैं या कोई और ?

उ० : मैं ही तो हूं। लेकिन शायद भविष्य में उनसे अलग हो जाऊं क्योंकि मैं सिलबिल-पिलपिल के साथ आया और इतनी तरक्की कर ली कि दीवाना के दफ्तर में अलग डिपार्टमैंट अपनी डाक का खोल लिया है तो दोनों मुझसे जलने लगे हैं। इतने जलते हैं कि आजकल वह सिगरेट भी मुंह में रखते हैं तो बगैर माचिस लगाये ही धुआं उठने लगता है।

अशोक मिगलानी—कैथल : क्या आप हमें अपनी पूछ दे सकते हैं क्योंकि हमारे पास पत्र रखने के लिए आप जैसी प्यारी २ पूछ नहीं है ?

उ० : सिलबिल पिलपिल गुड़गांवें के चौधरी हैं उनके पास बड़े-बड़े खेत हैं।

प्र० : पिलपिल और सिलबिल से आपका क्या रिश्ता है ? जो आप हमें छोड़ कर उनका ख्याल रखते हैं ?

उ० : उन्हीं के खेतों का अनाज खाकर तो पला हूं। आपके पास तो डाक टिकट जितनी लम्बी चौड़ी जमीन भी नहीं होगी।

एस० बोगती 'सानु'—अमृतसर : गरीबचन्द जी, आपकी दोस्ती केवल सिलबिल-पिलपिल से है, मोटू-पतलू से क्यों नहीं है ?

उ० : मोटू-पतलू के साथ उल्लू रहता है। आपको तो पता ही होगा कि उल्लू मेरा दुश्मन है।

योगेश संघवी जैन—गिरिडीह : मैं नीतू सिंह का दिल देखना चाहता हूं वह कितना बड़ा है ?

उ० : कितना बड़ा है या कितना छोटा उससे मुझे या आपको क्या जिस दिन नीतू और ऋषि कपूर की सगाई हुई उस दिन सिलबिल दौड़-दौड़ा आया और मुझे बोला, 'सुना तूने नीतू की सगाई ऋषि कपूर से हो गयी।'

मैं बोला, 'तो मुझे क्या उससे ? मेरे साथ सगाई हुयी होती तो बात भी थी।'

गरीब चन्द की डाक
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

तर्क-कुतर्क

तर्क—आपके पिताजी का नाम क्या है ?
कुतर्क—जी नहीं उनका नाम गोपाल है, क्या तुम्हारे पिताजी का नाम होगा।
तर्क—आप यहां तशरीफ रखिये ?
कुतर्क—मेरे पास तो अभी कुछ नहीं है।
तर्क—मैं आपका फोटो खींच सकता हूं ?
कुतर्क—क्यों खींचते हो फट जाएगा।
तर्क—आपकी घड़ी में क्या बज रहा है ?
कुतर्क—शायद इसके पुर्जे बज रहे होंगे।
तर्क—आज आपका खाना मेरे घर पर है ?
कुतर्क—यहां से ले कौन गया था।
तर्क—आज नये जूते पहनने की इच्छा है ?
कुतर्क—कौनसे मन्दिर से।
तर्क—आपका भाई मुझे चकमा दे गया ?
कुतर्क—मुझे दे दो मैं उसे वापस दे दूंगा।
तर्क—मैं अपना जन्म दिन मनाऊंगा ?
कुतर्क—वो तुम से रूठ गया था।
तर्क—तुम्हारी घड़ी में कितना बज रहा है ?
कुतर्क—बहुत बज रहा है।
तर्क—कल हमारा फ्यूज उड़ गया था।
कुतर्क—पिंजरे में बंद नहीं था ?
तर्क—यह घड़ी हॉल ही में खरीदी है।
कुतर्क—सिनेमा हॉल में ?
तर्क—आज चक्कर आ रहे हैं।
कुतर्क—कहां से कलकत्ता से या बम्बई से ?
तर्क—अपना पेन देना, खाली हो तो ?
कुतर्क—पेन में स्याही भरी हुई है।
तर्क—मेरा तो जीना ही बेकार है ?
कुतर्क—तो दूसरा लगवाओ।
तर्क—जरा हवा खालूं।
कुतर्क—हवा हराम का माल है ?
तर्क—घूम आएं ?
कुतर्क—चक्कर आ जाएंगे।
तर्क—मैं तो मर चला ?
कुतर्क—मर कर भी चल दिये।
तर्क—बुखार आ रहा है ?
कुतर्क—फाटक बन्द कर दो।

तर्क-कुतर्क
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

सवाल यह है ?

क्या इनका भी कोई जवाब है ?

एक बड़े नेता किसी बीमारी में आधे बेहोश पड़े हैं. इनके मित्र और सगे सम्बन्धी उपस्थित हैं। डा० साहब पहुंच गये हैं, पर किसी की समझ में नहीं आ रहा है कि नेता जी को रोग क्या है?
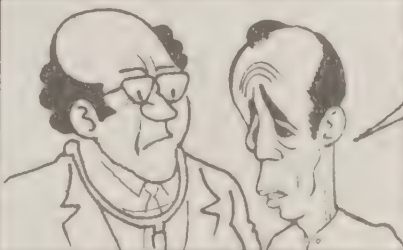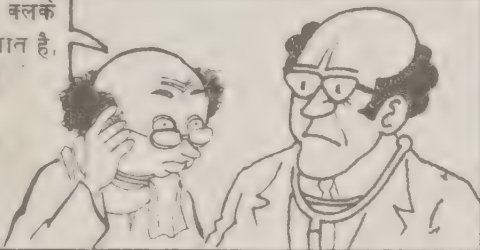
आगामी अंक में इस पृष्ठ पर देखिये, और एक लाजवाब सवाल।

१३ पृष्ठ का शेष

विनोद ने मनीआर्डर के तले का कूपन देखा···लिखा था—

'जीजाजी···बड़ी मुश्किल से बच्ची का जेवर गिरवी रखकर दो सौ रुपये का प्रबन्ध हो सका है···भुगतान करने का शीघ्र ही प्रबंध कीजिएगा ताकि जेवर न डूबने पाए और बच्ची के पिता को ताना देने का अवसर न मिले···।' विनोद ने गम्भीरता से कुछ सोचा ग्रौर 'कूपन' रख दिया ।

'अब सुबह ही जाकर रुपया जमा कर देना ।' माँ ने कहा ।

'अब दाखिला मिलना मुश्किल है···' विनोद ने ठंडी साँस लेकर कहा ।

'क्यों ?' पिताजी आश्चर्य से बोले ।

'आज दाखिले का आखिरी दिन था ।'

'ओह···।' पिताजी हाथ मलकर बोले, तुम प्रयत्न तो करके देखो ।

'प्रयत्न तो करूंगा ही ।'

दूसरे दिन विनोद कालेज गया···उसने बहुत प्रयत्न किया कि किसी प्रकार दाखिला हो जाए लेकिन सफलता नहीं हुई—अन्त में उसने डीन आफिस के क्लर्क से बड़े विनय से अपनी विवशता जताते हुए अनुरोध किया कि वह किसी प्रकार उसकी सहायता करे···अगर उसे दाखिला न मिला तो फिर शायद कभी वह आगे नहीं पढ़ सकेगा ।

क्लर्क ने सहानुभूति व्यक्त करते हुए कहा कि अगर कल तक वह बीस रुपये 'लेट फीस' जमा कर दे तो वह उसके लिए प्रयत्न कर सकता है ।

विनोद चुपचाप घर चला आया···किसी से कुछ नहीं कहा, इसलिए कि वह जानता था घर में 'लेट फीस' के बीस रुपये भी नहीं निकल पाएंगे । खाने के बाद पिताजी ने उसे बुलाकर पूछा—

'क्या हुआ···।'

'लेट फीस' के बीस रुपये और जमा हो जाएं तो शायद दाखिला मिल जाए ।'

'बीस रुपये···' पिताजी किसी सोच में डूब गए···फिर कुछ क्षण बाद आह भरकर बोले, 'भगवान ! क्या इस प्रकार हमारी परीक्षा लेनी है तुम्हें···।'

माँ चुपचाप उठ गयी और जब वापिस आई तो उनके हाथ में दस रुपये का नोट था···उन्होंने नोट विनोद को दे दिया और बोली—

'ऐसे ही समय के लिए···जरूरत के लिए रखे थे ।'

विनोद ने ठंडी सांस लेकर नोट जेब में रख लिया···अब प्रश्न केवल दस रुपये का था···कहाँ से लाए वह दस रुपये ? राजेश, मोहन और सुरेन्द्र से वह मांग नहीं सकता था···वह सोच ही रहा था कि इतने में सरिता आ गई···उसने विनोद को उदास बैठे देखकर पूछा—

'ऐसे चुपचाप क्यों बैठे हो ?'

'ग्रहों की चाल देख रहा हूं···'विनोद ने फीकी मुस्कराहट के साथ कहा—

'क्या लंगड़े हो गए हैं ग्रह ?' सरिता ने गम्भीरता से कहा ।

'कुछ ऐसा ही है—।'

'मैं भी तो सुनूं ।'

विनोद ने सारी बात बता दी···सरिता चुपचाप सुनती रही···फिर उठ कर चली गई···दस मिनट बाद वह वापस आई तो उसके हाथ में दस रुपये का नोट था ।

'यह लो—मैंने-थोड़े पैसे जोड़ कर यह नोट बनाया था कपड़ों का एक जोड़ा बनाने के लिए···लेकिन तुम्हारी आवश्यकता मेरे कपड़ों के जोड़े से अधिक है···इससे काम चलाओ ।'

'नहीं सारिता···यह नहीं हो सकता···' विनोद बोला, 'मैं तुम्हारी घरेलू स्थिति को भली-भांति जानता हूं ।'

'और जानते-समझते हुए भी इन्कार कर रहे हो···क्या तुम नहीं समझते कि इससे हमें कितना मानसिक दुःख होगा कि भगवान् ने हमें इस योग्य भी नहीं बनाया कि किसी की सहायता कर सकें ।'

'सरिता···।' विनोद की आवाज़ भर्रा गई ।

सरिता ने नोट बलपूर्वक विनोद के हाथों में ठूंस दिया और बोली—

'जब लौटाने योग्य हो जाओगे तो दुगुने करके वापस कर देना ।'

'स···सरिता···' भावुकता से विनोद की आवाज लड़-खड़ा गई···वह आगे कुछ नहीं कह सका ।

थोड़ी देर बाद सरिता वापस चली गई ।

दूसरे दिन विनोद ने लेट फीस के साथ पैसे जमा करा दिए और डीन आफिस के क्लर्क की सहायता से उसे दाखिला मिल गया । जब उसने घर आकर मां और पिताजी को यह खबर सुनाई तो उनकी आंखों में आंसू आ गए ।

उस शाम विनोद बहुत खुश रहा···काफी समय उसने सुरेन्द्र और मोहन के साथ गुजारा···शाम को थोड़ी देर के लिए सरिता की माँ के पास भी गया ।

'बड़े दिनों बाद दिखाई दिए···।' सरिता की माँ ने मुस्कराकर कहा ।

'हाँ माँ जी···।' विनोद ने उत्तर दिया. 'इधर कुछ ऐसी उलझनों में व्यस्त रहा कि आना ही न हो सका ।'

'कालेज में दाखिला मिल गया तुम्हें ?'

शेष पृष्ठ ४० पर

मदहोश

ही ही ही
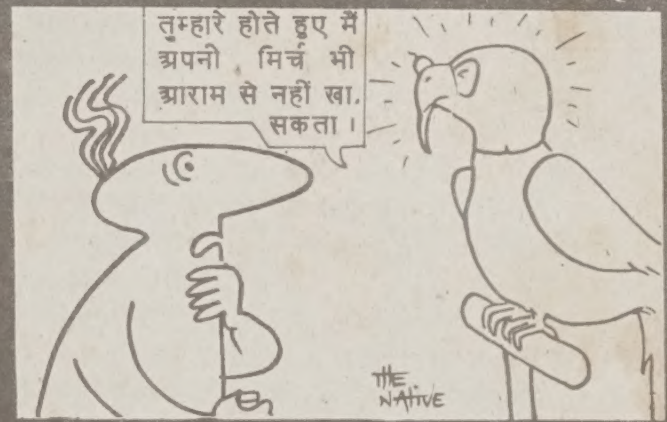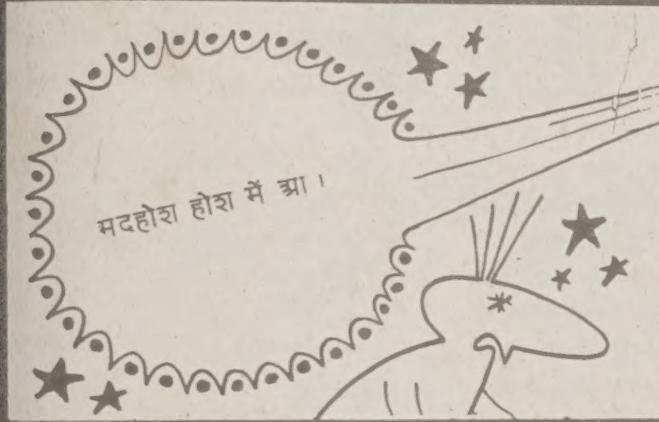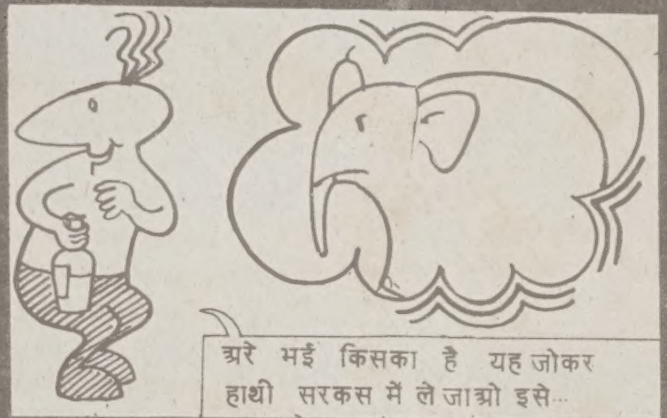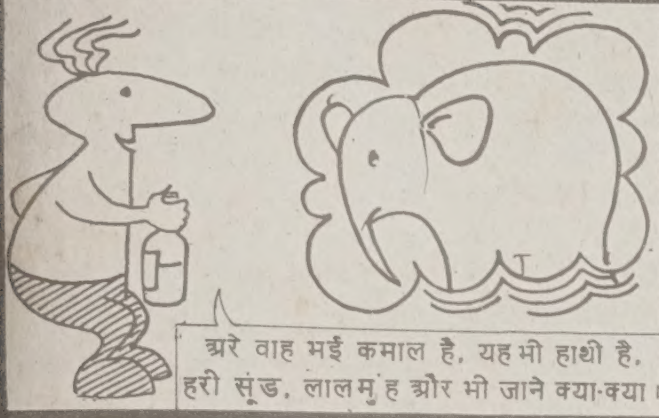
● दो व्यक्ति नदी किनारे एक बूढ़े व्यक्ति को तैरते हुये देख रहे थे। वह बूढ़ा बहुत आसानी से तैर रहा था जैसे मछली हो। कभी-कभी ऐसा लगता जैसे पानी में सड़क जैसी आसानी से चहल कदमी कर रहा है।

एक बोला, 'कमाल है साहब, इस बूढ़े के तैरने की कला। दूसरा बोला, 'सीधी सी बात है तैरना तो इसे आयेगा ही। यह रिटायर होने से पहले पिछले साल माडल टाऊन में डाकिया था।'

(याद है माडल टाऊन में कैसी बाढ़ आई थी ?)

● एक जिमनास्ट अपने मित्र से कहने लगा, 'मैं रोज सुबह दौड़ लगाया करता था जिससे मेरी टांगे मोटी हो गयीं। मैं तैरा करता था उससे मेरे हाथ मोटे हो गये।'

मित्र, 'तुमने शीर्षासन भी किया होगा तभी तुम्हारी अक्ल भी मोटी हो गयी है।'

● एक महिला ने प्रवेश किया और बैठ कर बोली, 'डाक्टर, सच-सच बताइये मुझ में क्या खराबी है ?'

उसने उत्तर दिया, 'श्रीमती जी, आपकी नाक मोटी है, होंठ चिम्पांजी की तरह हैं और आपने जो साड़ी पहन रखी है वह ऐसे लगती है जैसे गैंडे की पीठ पर सुखाने के लिए डाल रखी हो, चौथे आपका जूड़ा झल्ली वाले की झल्ली जैसा लग रहा है। पांचवीं खराबी आपकी आंखों में है वर्ना आप दरवाजे पर लगा बोर्ड पढ़ लेतीं कि मैं फोटोग्राफर हूं ! डाक्टर की दुकान आगे वाली है।'

● दो मित्र एक लड़की के बारे में बात कर रहे थे।

पहला, 'सुना है वह घमण्डी है। हाथ तक नहीं पकड़ने देती।'

दूसरा, 'तुम हाथ की कह रहे हो ! मैं कल उसके साथ था जो कुछ वह कहती रही उसका सिर-टांग तक नहीं पकड़ पाया मैं।'

● दो मित्र एक तीसरे मित्र की बात कर रहे थे।

पहला, 'किस्मत हो तो रमेश जैसी जो आखिरी दम तक साथ दे।'

दूसरा, 'वह कैसे ?

पहला, 'वह कल नदी में तैरने गया। गलती से एक मछली निगल गया। हास्पिटल में आपरेशन करना पड़ा। बेचारा मर गया लेकिन किस्मत देखो पेट से जो मछली निकाली गई उसके पेट में हीरे के नग वाली अंगूठी निकली जिससे आपरेशन फीस और क्रिया-कर्म का सारा खर्चा निकल गया।'

● बाबू करन चन्द डरपोक किस्म के थे उनकी बीवी एक दिन पड़ोसिन से लड़ पड़ी। झगड़ा बढ़ गया और पड़ोसिन का पति बीच में कूद पड़ा और ललकारने लगा, 'अपने मर्द से कह जरा बाहर निकले फिर बताऊंगा।'

बीबी ने आकर बाहर चलने के लिये कहा तो करम चन्द बोले, 'भागवान, मैं तो उसके नाकों चने चबवा देता ! उससे लोहा लेता लेकिन क्या करूं आज मेरा मंगल का व्रत है ! धातु की बनी चीजों को हाथ नहीं लगा सकता।'

३८ पृष्ठ का शेष

'हां मिल गया'''वह भी सरिता की कृपा से ।'

'सरिता की कृपा से ?' मां ने आश्चर्य से उसे देखते हुए दोहराया ।

'दस रुपये की कमी रह गई थी दाखिले की फीस में ।' सरिता ने उकताए हुए स्वर में कहा, मैंने दस रुपये कपड़ों के लिए जोड़े थे'''वह दे दिये तो मेरी बड़ी कृपा हो गई ।'

'मैं तो इसे कृपा ही समझता हूं ।' विनोद मुस्कराया ।

फिर वह वहां से लौट आया ।

दूसरे दिन सुबह उसे नई क्लास में जाना था'''वह नहा-धोकर तैयार हुआ, कपड़े पहने और नाश्ता करके चलने लगा तो मां और पिताजी ने आशीर्वाद देते हुए '''उसकी चिर-आयु सुखी तथा समृद्ध जीवन के लिए प्रार्थना की ।

विनोद मन में सुन्दर भविष्य के सुनहरे सपने लिए घर से निकला और साइकल पर कालेज के लिए रवाना हो गया ।

जाड़ा आरम्भ होने वाला था ।

पिताजी और मां फूलवती की शादी के लिए चिंतित थे'''उन्होंने फूलवती का रिश्ता डाक्टर से निश्चित तो कर दिया था लेकिन अब इस आर्थिक अभाव की दशा में शादी का प्रबंध कैसे करें ? अपने बेटे के लिए वह दो सौ रुपये तो जुटा नहीं पाए थे इतना अधिक शादी के खर्च का भार कैसे उठाते ? —दूसरी ओर लोक-लाज उन्हें खाए जा रही थी'''इस लोक-लाज के दो पहलू थे'''।

पहला यह कि बुआ ने लगातार कहकर उनके मन में यह बात बिठा दी थी कि फूलवती उनकी बेटी अधिक थी और बुआ को कम'''अब यह कैसे होता कि जिसे बेटी कह दिया जाए उसकी शादी के लिए पैसा उसके माता-पिता से लिया जाए—दूसरे बुआ के कहने पर उन्होंने यह शादी अपने घर से ठहराई थी क्योंकि गांव के नाम से लड़केवाले बिदक जाते थे'''अब यह उनका अपमान था कि शादी तो उनके घर से हो और रुपया बुआ का खर्च हो—जबकि अब तक इस घर से जितनी भी शादियां हुईं उनमें रुपया पिताजी का ही लगता रहा'''और फिर यह तो उनकी स्वयं पाली हुई बेटी थी''' मामला स्वाभिमान का भी था ।

विनोद यह सब कुछ देख-सुन रहा था और मन-ही-मन मां और पिताजी की बुद्धि पर क्षुब्ध हो रहा था'''और सोच रहा था कि यह लोग अपना अभिमान रखने के लिए अपने हाथ-पांव काटते गए तो आगे क्या होगा ? सचमुच उनकी आंखों पर पर्दे पड़ गए हैं'''और जिनके लिए वह इतना कुछ करते हैं उनका व्यवहार स्वयं देख भी चुके हैं—विनोद को अब भी वह दृश्य याद था जब वीरेन्द्र मामा ने उसके दादा जी के संदूक से रुपये चुराए थे'''यह मामा उन्हीं के यहां पला और मां ने ही उसकी शादी की'''समय पड़ने पर कैसा साथ छोड़ गए'''उसका और उसकी पत्नी का सारा खर्चा मां के सिर पर था'''अब इसलिए घर छोड़ गए कि पिताजी का हाथ तंग होने से डरते थे कि कहीं घर का थोड़ा-सा बोझ उनके कंधों पर न पड़ जाए, और एक बड़ी बुआ थीं जिनके पति किसी दफ्तर में मामूली नौकर थे'''बुआ शुरू से ही पिताजी के साथ रहती थीं लेकिन उन्होंने भी दादाजी के संदूक से रुपये चुराने में कोई पाप नहीं समझा'''और दस बीस या सौ नहीं पूरे एक हजार रुपए थे'''क्या वह सारे रुपये उनका बेटा उड़ा गया ? अवश्य बेटे के साथ इस चोरी में उनका हाथ था'''और समय पड़ने पर उसी बुआ ने दो सौ रुपया देने से इन्कार कर दिया'''कितने कृतघ्न हैं यह लोग '''यह प्रियजन'''सगे रिश्तेदार'''।

बस, जरा मासी ने ही थोड़ी सहानुभूति दिखाई जो विनोद की फीस के लिए दो सौ रुपये भिजवा दिए'''लेकिन दूसरे ही महीने से उनके तकाजों के पत्र आ रहे थे कि बच्ची का जेवर डूब जाएगा'''जल्दी रुपया वापस करें'''बच्ची के पिता अलग ताने देते हैं कि ससुराल भी मिली तो ऐसी नगी कि दामाद का रुपया लेकर खा गए''' मुझसे ताने नहीं सुने जाते'''रुपया जल्दी भिजवा दें—और यह बातें पढ़कर मां और पिताजी का दिल भर आता था कि यह वही ही लड़की है जिसे मां तभी अपने साथ ले आई थीं जब अभी वह तुतलाकर बोलती थी'''उसे पाल-पोसकर बड़ा किया'''उसकी शादी की'''हजारों उड़ गए और अब दो सौ रुपये के लिए वह ऐसी बातें लिखकर भेजती है '''।

और यह गांव वाली बुआ ही पिताजी से कौन-सी सहानुभूति रखनी का ही यह हाल था तो वह बुआ थीं—यह और बात है, फि सदा सगी बहन का ही स्थान वह प्रियजन थे जिनके लिए फि हो गए'''सबका व्यवहार भी था'''फिर भी मां और पिताजी

शादी के लिए चिंतित थे'''और रहा था कि इससे बड़ी और कौन होगी इनके लिए'''अब तो इन्हें जानी चाहिए—जब उसकी सम नहीं आता तो वह झुंझलाकर नोचने लगता था'''उसका जी चा कर दे'''पिताजी दूसरों के लिए सिर पर भार उठाए फिरते हैं त उनका बेटा है—पिताजी ने स्वार्थी पर हजारों लुटा दिए और जब बे पहनने के दिन आए तो घर में गरीबी के सिवाय कुछ नहीं र मुश्किलों से उसका दाखिला हुआ रुपये की पुकार अब तक पड़ रह मील दूर उसका कालेज है और ठंड तथा कड़कती धूप में वह पै जाता है'''साईकल तो अलग रही के लिए उसकी जेब में दस-बीस पै नहीं होते—यह पिताजी हैं के भविष्य के लिए कोई चिंता मां हैं जिन्हें भाई-बहन की चिंता अवकाश नहीं'''उन्हें अपने बेटे परवाह ?

शेष आगा
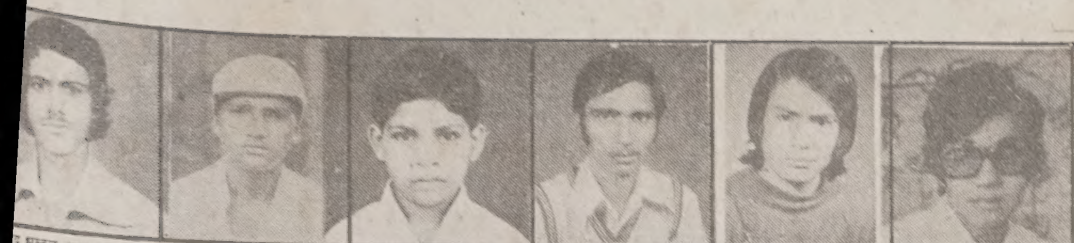
[illegible] अब्दुल रज्जाक, बहाव भंडार रामनगर, बाजार [illegible], गोंदिया, १७ वर्ष, [illegible]सी उपन्यास पढ़ना, पत्र-[मित्र]ता करना।

मनोज कुमार होटला, जे. जे. कालोनी वजीरपुर, के० १०७, दिल्ली, १६ वर्ष, गप्पें मारना, दीवाना पढ़ना, कविता लिखना, पत्र मित्रता करना।

सुनील दत्त शर्मा, ४७ दुर्गा नगर, मेरठ, १३ वर्ष, दीवाना पढ़ना, दोस्ती करना, फिल्म देखना, मोटर चलाना सीखना, फरमाईश सुनना।

राजकुमार सिंह द्वारा० के० [illegible] ट्रेडर्स शाहगंज, [illegible], १८ वर्ष, क्रिकेट खेलना, पत्र-मित्रता करना, कहानी लिखना, गीत सुनना।

नगेन्द्र भट्टाचार्य मी०[illegible] १५/२२६, [illegible] काल [illegible], काठमांडो, १८ वर्ष, फिल्म पेपर देखना, [illegible] देखना।

अर्जुन देव, मकान नं० १२६४, राजपुरा [illegible] १७ वर्ष, [illegible], पत्र मित्रता [illegible] विदेश में यात्रा करना, बड़ों का आदर करना।

[illegible]चन्द्र नागर, गांव हजारो[illegible], पोस्ट सुडाना, बिहार, [illegible] वर्ष, पढ़ना, क्रिकेट खेलना, [illegible] उड़ाना, हवा में टहलना, [illegible] चलना।

प्रताप कुमार श्रेष्ठ, द्वारा दुर्गा लाल श्रेष्ठ, पोस्ट बाक्स न० ५६४, ओमबहाल, काठमांडो, नेपाल, १७ वर्ष, दीवाना पढ़ना।

एस० मन्जूर हसन कादरी, जिया स्टोर, कोटगेट के अन्दर, बीकानेर, २१ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना, हाकी खेलना।

नरेश कुमार बाना, सी०/५५, मालवीय नगर दिल्ली, १४ वर्ष, दीवाना पढ़ना और दूसरों को बेवकूफ बनाना, प्रेम करना।

राजीव कुमार बग्गा, द्वारा० [illegible] दिल्ली १६ वर्ष, [illegible] मित्रता करना।

[illegible] कुमार शर्मा, द्वारा [illegible], पोस्ट [illegible], (बिहार), १८ वर्ष, [illegible] करना।

[illegible]रेश कुमार गोयल, लखारो [illegible] मोहल्ला, मकान नं० ६००, [जो]धपुर, (राज०), २० वर्ष, [illegible]क टिकट संग्रह करना, [पत्र]-मित्रता।

श्याम सुन्दर माहेश्वरी, प्रध्यक्ष रेणु रेडियो श्रोता संघ, फारबिसगंज, (बिहार), २१ वर्ष, पत्र-मित्रता, दीवाना पढ़ना, फरमाईश भेजना।

[illegible]मेश शर्मा, द्वारा डा० एम० शर्मा, सरिया फैक्टरी के पीछे, रानी बाजार, बीकानेर, [illegible] वर्ष, डाक टिकट संग्रह व एक्टिंग करना।

[illegible]न्द्र शर्मा गांव व पोस्ट [illegible], जिला करनाल, १८ वर्ष, स्कूटर चलाना, दीवाना पढ़ना, गीत गाना, पत्र-मित्रता करना।

राजकुमार सिन्हा, पर्वती [illegible], बड़ीबाग, गया, १८ वर्ष, कहानी लिखना, तार भेजना, किताब पढ़ना, पत्र डालना।

[illegible] शर्मा, [illegible] बाजार [illegible] रायपुर (म.प्र.), २० वर्ष, पत्र मित्रता करना, [illegible] उड़ाना, नदी में तैरना, भोजन खाना।

[illegible] विश्वास, ३/० सिविल [लाइ]न, रायपुर (म० प्र०) [illegible] वर्ष, रेकार्डिंग करना, [illegible] सुनना, दीवाना पढ़ना, [फर]माईश भेजना।

राधा किशन बी० एस० सी०, द्वारा बाला राम जी सुथार, [illegible] का मोहल्ला पुरानी गिनानी बीकानेर, १३ वर्ष, कार चलाना।

अशोक तंवर, द्वारा के० डी० तंवर, पुरानी गिनानी पवासर कुआं बीकानेर, १५ वर्ष, दीवाना पढ़ना, पत्र मित्रता करना।

[illegible] पाल, ५०२ नेपियर टाउन, जबलपुर (म० प्र०), १० वर्ष, नदी में तैरना, पत्र लिखना, क्रिकेट खेलना, उपन्यास पढ़ना।

[illegible] (राज०), १४ वर्ष, दीवाना पढ़ना, पत्र मित्रता करना, [illegible]।

[illegible] सहारनपुर १८ वर्ष, दीवाना पढ़ना, नई वस्तुएं एकत्रित करना, पत्र-मित्रता।

[illegible] शिवनारायणी मकान नं० [illegible]८, देसवाली मोहल्ला, [illegible] बाजार अजमेर, १६ [वर्ष], दीवाना पढ़ना, काम करने [में] मन लगाना।

सुधीर श्रीवास्तव, बाँके साह चौक, चतुर्भुज[स्थान] मुजफ्फरपुर, १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना, पढ़ने में रुचि रखना, दूसरों की सहायता करना।

श्याम प्रकाश, १०२० जमना बाजार दिल्ली, २५ वर्ष, पत्र मित्रता करना, फरमाईश भेजना, रेडियो सुनना, हवा में टहलना।

सुधीर कुमार, राठी गट, मूल मण्डी, धर्मपुर, २२ वर्ष, अच्छी किताबें पढ़ना व संग्रह करना, दूसरी भाषाएं सीखना, विश्राम करना।

दीवाना फ्रैंडस क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता: दीवाना फ्रैंडस क्लब
8-बी बहादुरशाह जफ़र मार्ग नई दिल्ली-110002

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ______
पता ______
आयु ______ शौक ______

[illegible] प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

चूना कुस्मुरा

● एक देहाती बम्बई गया। वहां उसका रिश्तेदार था जो उसे समझाने लगा कि फैशन किस तेजी से वहां बदलते हैं। उसने अभी बन ही रहे एक ६० मंजिला मकान को दिखाकर कहा, 'देखो ऊपर वाली २० मंजिलें अभी बन रही हैं। मजदूर काम कर रहे हैं। वह इस वक्त तीसवीं मंजिल के रैस्टरॉं में खाना खाने गये हैं और नीचे की बीस मंजिलों वाले किरायेदार फ्लैट खाली कर रहे हैं। क्योंकि वह फ्लैट अब पुराने फैशन के पड़ गये हैं।'

● एक द्विवेदी जी थे,कुछ दिन बाद उन्होंने अपना उपनाम बदलकर त्रिवेदी लिखना शुरू किया। मित्रों ने पूछा तो बोले, 'यार हाल में ही मैंने तीसरी शादी की है ! तीन बार वेदी के चक्कर लगाये तो त्रिवेदी हो गया कि नहीं ?'

● व्याकरण के अध्यापक वाक्यों में स्त्रीलिंग, पुलिंग का सही इस्तेमाल समझा रहे थे। उन्होंने ब्लैक बोर्ड पर गलत वाक्य लिख छात्रों से ठीक करवाना शुरू किया। उन्होंने लिखा 'मेरा घर सूनी है' और सुरेश से पूछा, 'इसमें क्या गलती है ? गलती ठीक करो।'

सुरेश बोला, 'मास्टर जी, इसमें आपके घर वालों की गलती है। आपकी जल्दी शादी करनी चाहिये।'

● जज :(अपराधी से) 'तुम दावा करते हो कि तुम एक बहुत शांति प्रिय आदमी हो फिर भी तुमने कांस्टेबल के सिर पर ईंट दे मारी ?'

अपराधी : 'हुजूर मैं ठीक कह रहा हूं। कांस्टेबल के ईंट मारने के बाद मैंने उसके मुख पर ऐसी शांति छायी देखी जैसी पहले कभी नहीं देखी उसके मुंह पर।'

● एक व्यक्ति अपने दोस्त से—यार तुम्हारी बीबी मोटापा कम करने के लिये डायटिंग कर रही थी ! घटा मोटापा ?

दोस्त—हां। घटते-घटते पिछले हफ्ते वह बिल्कुल ही गायब हो गयी।

कई अभिनेत्रियों-अभिनेताओं को रिटायर करने के बाद आज भी 'आन ड्यूटी'

सदा बाहर अभिनेता देवानन्द का जीवन आरम्भ में बेहद संघर्षमय रहा। फिल्मों में प्रवेश से पहले यह डाकखाने में साधारण क्लर्क थे। लेकिन फिल्मों में प्रवेश की लगन इनकी पक्की थी। अपनी इसी लगन और मेहनत के बल पर देवानन्द साधारण क्लर्क होते हुये भी आज सफल अभिनेता ही नहीं अपितु निर्माता और निर्देशक भी हैं।

एक लम्बे संघर्ष के बाद जब देवानन्द को फिल्मों में चांस मिला तो यह फूले नहीं समाये। इन्होंने फिल्म निर्माण संस्था (नवकेतन) के नाम से खोली जो आज भी शानदार फिल्में फिल्म जगत को प्रदान कर रही हैं।

फिल्म 'हम दोनों' में देवानन्द ने डबल रोल निभाया और दोनों ही भूमिकाओं में यह इतने जमे कि दर्शक आज तक इन्हें नहीं भुला पाये। नरगिस, मधुबाला, मीनाकुमारी, गीताबाली, नलिनि जयंत, वहीदा रहमान, साधना, वैजयंतीमाला जैसी सभी सफल भूतपूर्व अभिनेत्रियों के जोड़ी दार नायक बन चुके हैं और ख्याति अर्जित कर चुके हैं।

देवानन्द को यदि सदाबाहर अभिनेता कहा जाए तो गलत ना होगा। देवानन्द के जमाने के साथी कलाकार आज या तो निर्माता-निर्देशक बन गये हैं या फिल्मों में अपने बेटों को पेश कर रहे हैं। इन रिटायर अभिनेताओं में राजकपूर, राजेन्द्र कुमार, शम्मीकपूर, विश्वाजीत, जॉय मुकर्जी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। राजकपूर अपने दो पुत्र फिल्म उद्योग में उतार चुके हैं। रणधीर कपूर और ऋषि कपूर। इनका तीसरा पुत्र भी (चिन्पू) शीघ्र ही रुपहली पर्दे की रौनक बनने आ रहा है।

राजेन्द्र कुमार ने अपने पुत्र कुमार गौरव को फिल्मी पर्दे पर पेश करने की योजनायें चालू कर रखी हैं। कुमार गौरव नवोदिता विजेता (सुलक्षणा पंडित की छोटी बहन) के साथ फिल्म 'रॉकी' में आ
है।

शम्मी कपूर अपने पुत्र कुणाल क
को पर्दे पर पेश करने की योजना बना
हैं।

जहाँ इन कलाकारों के पुत्र फिल्मी
की रौनक बन रहे हैं वहाँ देवानन्द आज
कच्ची उम्र की कन्याओं के साथ ब
नायक फिल्मों में आ रहे हैं यह
आश्चर्यजनक है। देवानन्द ने अपने आ
कैसे 'केनटेन' कर रखा है, सब यही देख
ताज्जुब में हैं। जब एक प्रेस सम्मेलन
एक पत्रकार ने देवानन्द से उनकी सेहत
राज पूछा तो वह बोले, 'मैं व्यायाम
खुराक के मामले में कभी बदपरहेजी
करता। मैं सवेरे नाश्ते में शहद लेत
और रात को सोने से पहले एक गिलास
में फलों का सेवन अधिक करता हूँ।'

यही कारण है कि देवानन्द आज
जीनत अमान, टीना मुनीम जैसी कम
की लड़कियों के साथ बतौर हीरो आ
और अब तो यह भी सुना जा रहा है
देवानन्द अपनी आगामी फिल्म में एक
नई कम उम्र को लड़की को बतौर अ
नायिका प्रस्तुत करने का प्लान बना
हैं।

फिल्म 'हरे रामा हरे कृष्णा' में
नंद ने जीनत अमान को एवन 'बिग
दिया। इससे पहले 'गैम्बलर' में
जाहिरा और जाहिदा नाम की दो
दिताओं को पेश कर चुके हैं। 'देस पर
में टीना मुनीम को प्रस्तुत किया और
अपनी फिल्म 'लूटमार' में वह फिर
मुनीम के साथ नायक के रूप में दि
देंगे। नये कलाकारों को प्रोत्साहन दे
अलावा देवानन्द में यह विशेपता है कि
नये कलाकार की इतनी अधिक पब्लि
करते हैं कि फिल्म से ज्यादा कलाकार
जाता है। जीनत अमान, टीना मुनीम
जीती जागती मिसालें हैं।

एक पीढ़ी की हीरोइनों को रि
करके देवानन्द, हेमा मालिनी, जीनत अ
राखी आदि के साथ भी नायक बन
हैं और अभी तक वह जवान, तरो
नजर आते हैं। फिल्म उद्योग में ऐसे
बहार सफल अभिनेता बहुत कम देख
मिलते हैं। 'नया जॉनी' में देवानन्द
विशेष भूमिका में दिखाई देंगे।